Postal Registration No. CHD/0107/2024-2026 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा
सत्यमेव जयते

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 24 अंक 10 30 अक्तूबर, 2024 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

सच्चे स्वतन्त्रता सेनानी पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री।

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

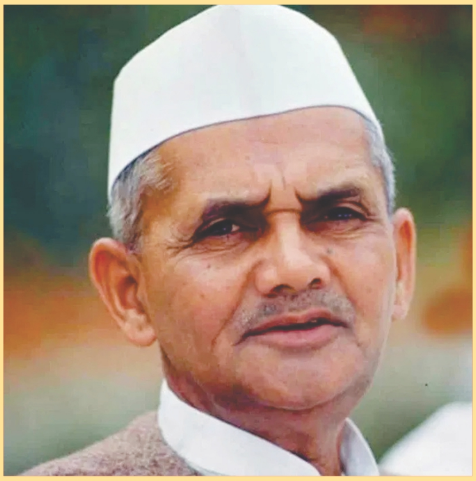

श्री लाल बहादुर शास्त्री का जन्म 2 अक्टूबर, 1904 को उत्तर प्रदेश के वाराणसी के एक छोटे से रेलवे शहर मुगलसराय में हुआ था। उनके पिता एक स्कूल शिक्षक थे जिनकी मृत्यु तब हो गई जब लाल बहादुर शास्त्री केवल डेढ़ वर्ष के थे। उन्हें वाराणसी में चाचा के साथ रहने के लिए भेजा गया ताकि वह हाई स्कूल जा सकें। घर पर उन्हें नन्हें, या 'छोटा बच्चा' बुलाया जाता था और वह बिना जूतों के कई मील पैदल चलकर स्कूल जाता था। 1927 में उनका विवाह हो गया। उनकी पत्नी, ललिता देवी, उनके गृह नगर के पास मिर्जापुर की रहने वाली थी। दहेज में एक चरखा और हाथ से बुना हुआ कुछ गज कपड़ा लेकर आई थी। लाल बहादूर शास्त्री को इससे अधिक कुछ भी स्वीकार नहीं था।

लाल बहादुर शास्त्री जी सच्चे गान्धीवादी थे जिन्होंने अपना सारा जीवन सादगी से बिताया और उसे गरीबों की सेवा में लगाया। स्नातक (डिग्री) स्तर तक की शिक्षा समाप्त करने के पश्चात् वे भारत सेवक संघ से जुड़ गये और देशसेवा का व्रत लेते हुए यहीं से अपने राजनैतिक जीवन की शुरुआत की। भारतीय स्वाधीनता संग्राम के सभी महत्वपूर्ण कार्यक्रमों व आन्दोलनों में उनकी सक्रिय भागीदारी रही और उसके परिणामस्वरूप उन्हें कई बार जेलों में भी रहना पड़ा। स्वाधीनता संग्राम के जिन आन्दोलनों में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही उनमें 1921 का असहयोग आंदोलन, 1930 का दांडी मार्च तथा 1942 का भारत छोड़ो आन्दोलन उल्लेखनीय हैं। पूरे ग्यारह दिन तक भूमिगत रहते हुए यह आन्दोलन चलाने के बाद 19 अगस्त 1942 को शास्त्रीजी गिरफ्तार हो गये। 1930 में महात्मा गांधी ने दांडी में समुद्री तट तक मार्च किया और शाही नमक कानून को तोड़ दिया। इस प्रतीकात्मक इशारे ने पूरे देश को झकझोर कर रख दिया। लाल बहादुर शास्त्री ने तीव्र ऊर्जा के साथ स्वयं को स्वतंत्रता संग्राम में झोंक दिया। उन्होंने कई विद्रोही अभियानों का नेतृत्व किया और कई साल ब्रिटिश जेलों में बिताए। इस संघर्ष की आग में ही उनका फौलाद तपा और उनमें परिपक्वता आई।

वे भारत में ब्रिटिश शासन के विरोध के लिए महात्मा गांधी जैसे भारतीय आन्दोलनकारियों के विचारों से बहुत प्रभावित हुए। लाल बहादुर शास्त्री उस समय केवल ग्यारह वर्ष के थे, लेकिन राष्ट्रीय मंच पर पहुंचने की प्रक्रिया उनके दिमाग में पहले ही शुरू हो चुकी थी। जब गांधीजी ने अपने देशवासियों से असहयोग आंदोलन में शामिल होने का आह्वान किया, तब शास्त्री जी केवल 16 वर्ष के थे। उन्होंने महात्मा के आह्वान के जवाब में तुरंत अपनी पढ़ाई छोड़ने का फैसला किया। इस फैसले ने उनकी मां की उम्मीदों पर पानी फेर दिया। परिवार ने सोचा था कि यह एक संघर्षशील कदम था लेकिन उन्होंने मन बना लिया था। जो लोग उनके करीब थे, वे सभी जानते थे कि एक बार तय हो जाने के बाद वह अपना मन कभी नहीं बदलेंगे, क्योंकि उनके नरम बाहरी हिस्से के पीछे चट्टान की दृढ़ता थी। लाल बहादुर शास्त्री वाराणसी में काशी विद्या पीठ में शामिल हुए, जो ब्रिटिश शासन के विरोध में स्थापित कई राष्ट्रीय संस्थानों में से एक था। वहां वे देश के महानतम बुद्धिजीवियों और राष्ट्रवादियों के प्रभाव में आये और 'शास्त्री' विद्या पीठ से स्नातक की डिग्री प्राप्त की।

शास्त्रीजी के राजनीतिक दिग्दर्शकों में गांधी जी, पुरुषोत्तमदास टंडन और पण्डित गोविंद बल्लभ पंत के अतिरिक्त जवाहरलाल नेहरू भी शामिल थे। सबसे पहले 1929 में इलाहाबाद आने के बाद उन्होंने टण्डनजी के साथ भारत सेवक संघ की इलाहाबाद इकाई के सचिव के रूप में काम करना शुरू किया।

शेष पेज–2 पर

शेष पेज–1

इलाहाबाद में रहते हुए ही नेहरूजी के साथ उनकी निकटता बढ़ी। एक के बाद एक सफलता की सीढियाँ चढ़ते हुए वे नेहरूजी के मंत्रिमण्डल में पहले रेलमंत्री बने। रेल दुर्घटना होने पर त्याग पत्र दे दिया और गृहमन्त्री के प्रमुख पद तक जा पहुँचे। और इतना ही नहीं, इनकी मेहनत, ईमानदारी व देशभक्ति को देखते हुये नेहरू के निधन के पश्चात भारतवर्ष के दूसरे प्रधानमन्त्री भी बनाये गए।

उनकी साफ सुथरी छवि के कारण ही उन्हें 1964 में देश का दूसरा प्रधानमन्त्री बनाया गया। उन्होंने अपने प्रथम संवाददाता सम्मेलन में कहा था कि उनकी शीर्ष प्राथमिकता खाद्यान्न की अधिक पैदावार बढ़ाना है और वे ऐसा करने में सफल भी रहे। उनके क्रियाकलाप सैद्धान्तिक न होकर पूर्णतः व्यावहारिक और जनता की आवश्यकताओं के अनुरूप थे। निष्पक्ष रूप से यदि देखा जाये तो शास्त्रीजी का शासन काल बेहद कठिन रहा। पूँजीपति देश पर हावी होना चाहते थे और दुश्मन देश हम पर आक्रमण करने की फिराक में थे। 1965 में अचानक पाकिस्तान ने भारत पर सायं 7.30 बजे हवाई हमला कर दिया। परम्परानुसार राष्ट्रपति ने आपात बैठक बुला ली जिसमें तीनों रक्षा अंगों के प्रमुख व मन्त्रिमण्डल के सदस्य शामिल थे। प्रधानमन्त्री भी उस बैठक में शामिल हुये और उनके आते ही विचार–विमर्श प्रारम्भ हुआ। तीनों प्रमुखों ने उनसे सारी वस्तुस्थिति समझाते हुए पूछा, "सर! क्या हुक्म है?" शास्त्रीजी ने एक वाक्य में तत्काल उत्तर दिया, "आप देश की रक्षा कीजिये और मुझे बताइये कि हमें क्या करना है?" शास्त्रीजी ने इस युद्ध में नेहरू के मुकाबले राष्ट्र को उत्तम नेतृत्व प्रदान किया। लड़ाई के दौरान सेना का हौसला बढ़ाने के लिए उसके साथ बार्डर पर खड़े रहे और वे प्रथम प्रधानमंत्री थे जिन्होंने पहली बार किसान और जवान को प्रोत्साहित करते हुये, जय जवान–जय किसान का नारा दिया। इससे भारत की जनता किसान एवं जवानों का मनोबल बढ़ा और सारा देश एकजुट हो गया।

भारत पाक युद्ध के दौरान 6 सितम्बर को भारत की 15वीं पैदल सैन्य इकाई ने द्वितीय विश्व युद्ध के अनुभवी मेजर जनरल प्रसाद के नेतृत्व में इच्छोगिल नहर के पश्चिमी किनारे पर पाकिस्तान के बहुत बड़े हमले का डटकर मुकाबला किया। इच्छोगिल नहर भारत और पाकिस्तान की वास्तविक सीमा थी। इस हमले में खुद मेजर जनरल प्रसाद के काफिले पर भी भीषण हमला हुआ और उन्हें अपना वाहन छोड़ कर पीछे हटना पड़ा। भारतीय थलसेना ने दुगनी शक्ति से प्रत्याक्रमण करके बरकी गाँव के समीप नहर को पार करने में सफलता हासिल की। इससे भारतीय सेना लाहौर के हवाई अड्डे पर हमला करने की सीमा के भीतर पहुँच गयी। इस अप्रत्याशित आक्रमण से घबराकर अमेरिका ने अपने नागरिकों को लाहौर से निकालने के लिये कुछ समय के लिये युद्धविराम की अपील की।

शास्त्री जी जीता हुआ क्षेत्र पाकिस्तान को देना नहीं चाहते थे। आखिरकार रूस और अमेरिका की मिलीभगत से उन पर जोर डाला गया। उन्हें एक सोची समझी साजिश के तहत रूस में ताशकन्द बुलवाया गया जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया। जब समझौता वार्ता चली तो शास्त्रीजी की एक ही जिद्द थी कि उन्हें बाकी सब शर्तें मंजूर हैं परन्तु जीती हुई जमीन पाकिस्तान को लौटाना हरगिज मंजूर नहीं था। काफी जद्दोजहद के बाद पाकिस्तान के कहने पर अमेरिका और रूस की साजिश के तहत शास्त्रीजी पर अन्तर्राष्ट्रीय दबाव बनाकर ताशकन्द समझौते के दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करा लिये गये। पाकिस्तान के राष्ट्रपति अयूब खान के साथ युद्धविराम के समझौते पर हस्ताक्षर करने के कुछ घण्टे बाद 11 जनवरी 1966 की रात में ही उनकी मृत्यु हो गयी। यह आज तक रहस्य बना हुआ है कि क्या वाकई शास्त्री जी की मौत हृदयाघात के कारण हुई थी? इसकी पहली इन्क्वायरी स्व० श्री राज नारायण ने करवायी थी, जो बिना किसी नतीजे के समाप्त हो गई बताया गया। आश्चर्य की बात यह कि इण्डियन पार्लियामेण्ट्री लाइब्रेरी में आज उसका कोई रिकार्ड भी मौजूद नहीं है। यह भी आरोप लगाया गया कि शास्त्रीजी का पोस्टमार्टम भी नहीं हुआ। 2009 में जब यह सवाल उठाया गया तो भारत सरकार की ओर से यह जबाव दिया गया कि शास्त्रीजी के प्राइवेट डॉक्टर आर०एन०चुघ और रूस के कुछ डॉक्टरों ने मिलकर उनकी मौत की जाँच तो की थी परन्तु सरकार के पास उसका कोई रिकॉर्ड नहीं है। बाद में प्रधानमन्त्री कार्यालय से जब इसकी जानकारी माँगी गई, तो उसने भी अपनी मजबूरी जताई।

सबसे पहले सन् 1978 में प्रकाशित, एक हिन्दी पुस्तक ललिता के आँसू में शास्त्रीजी की मृत्यु की करुण कथा को स्वाभाविक ढँग से उनकी धर्मपत्नी ललिता शास्त्री के माध्यम से कहलवाया गया था। यही नहीं, कुछ समय पूर्व प्रकाशित एक अन्य अंग्रेजी पुस्तक में लेखक पत्रकार कुलदीप नैयर ने भी, जो उस समय ताशकन्द में शास्त्रीजी के साथ गये थे, इस घटना चक्र पर विस्तार से प्रकाश डाला है। गत वर्ष जुलाई 2012 में शास्त्रीजी के तीसरे पुत्र सुनील शास्त्री

ने भी भारत सरकार से इस रहस्य पर से पर्दा हटाने की माँग की थी। मित्रोखोन आर्काइव नामक पुस्तक में भारत से संबन्धित अध्याय को पढ़ने पर ताशकंद समझौते के बारे में एवं उस समय की राजनीतिक गतिविधियों के बारे में विस्तरित जानकारी मिलती है।

शास्त्रीजी की अन्त्येष्टि पूरे राजकीय सम्मान के साथ शान्तिवन (नेहरू जी की समाधि) के आगे यमुना किनारे की गई और उस स्थल को विजय घाट नाम दिया गया। जब तक कांग्रेस संसदीय दल ने इन्दिरा गान्धी को शास्त्रीजी का विधिवत उत्तराधिकारी नहीं चुन लिया, गुलजारी लाल नन्दा कार्यवाहक प्रधानमन्त्री रहे।

शास्त्रीजी को उनकी सादगी, देशभक्ति और ईमानदारी के लिये आज भी पूरा भारत श्रद्धापूर्वक याद करता है। उन्हें मरणोपरान्त वर्ष 1966 में भारत रत्न से सम्मानित किया गया था। लेखक परम देशभगत स्वतन्त्रता सेनानी लाल बहादुर शास्त्री जी को जाट सभा की समस्त कार्यकारिणी के साथ शत्–शत् नमन करते है।

डॉ० महेन्द्र सिंह मलिक, आई.पी.एस. (सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महा निदेशक हरियाणा,
प्रधान अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति व
जाट सभा, चंडीगढ़ व पंचकूला एवं
चेयरमैन, चौ० छोटूराम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

Japanese surprising research...

- Dr M. S. Malik, IPS (Retd.)

1. Acidity not only caused by diet errors, but more dominated because of stress.
2. Hypertension not only caused by too much consumption of salty foods, but mainly because of errors in managing emotions.
3. Cholesterol is not only caused by fatty foods, but the excessive laziness or sedentary lifestyle is more responsible.
4. Asthma not only because of the disruption of oxygen supply to lungs, but often sad feelings make lungs unstable.
5. Diabetes not only because of too much consumption of glucose, but selfish & stubborn attitude disrupts the function of the pancreas.
6. Kidney stones : .Not only Calcium Oxalate deposits, but pent up emotions and hatred
7. Spondylitis : not only L4L5 or cervical disorder; but over burdened or too much worries about future

If we want to be healthy then first

1) Fix your Mind
2) Do regular Exercises,
2) Move around,
3) Do Meditation
4) Laugh and make others laugh too.
5) Make Friends

These activities will help you to strengthen your soul, mind and body...

Be Healthy And Enjoy Your Life.

VIBRATE HIGHER

The Spiritually inclined will understand:

The covid virus has a vibration of 5.5hz and dies above 25.5hz.

For humans with a higher vibration, infection is a minor irritant that is soon eliminated!

The reasons for having low vibration could be:

Fear, Phobia, Suspicion, Anxiety, Stress, Tension.

Jealousy, Anger, Rage, Hate, Greed Attachment or Pain

And so......we have to understand to vibrate higher, so that the lower frequency does not weaken our immune system.

The frequency of the earth today is 27.4hz. but there are places that vibrate very low like:

- Hospitals
- Assistance Centers.
- Jails
- Under ground etc.

It is where the vibration drops to 20hz, or less.

For humans with low vibration, the virus becomes dangerous.

- Pain 0.1 to 2hz.
- Fear 0.2 to 2.2hz.
- Irritation 0.9 to 6.8hz.
- Noise 0.6 to 2.2hz.

- Pride 0.8 hz.
- Superiority 1.9 hz.

A higher vibration on the other hand is the outcome of the following behaviour :-

- Generosity 95hz
- Gratitude 150 hz
- Compassion 150 hz or more.

The frequency of Love and compassion for all living beings is 150 Hz and more.

Unconditional and universal love from 205hz..

So...Come on ...

Vibrate Higher!!!

What helps us vibrate high?

Loving, Smiling, Blessing, Thanking, Playing, Painting, Singing, Dancing, Yoga, Tai Chi, Meditating, Walking in the Sun, Exercising, Enjoying nature, etc.

Foods that the Earth gives us: seeds-grains-cereals-legumes-fruits and vegetables-

Drinking water: help us vibrate higher ..... !!!

The vibration of prayer alone goes from 120 to 350hz

So sing, laugh, love, meditate, play, give thanks and live !

_Let's vibrate high ...!!!

जाट क्षत्रिय हैं

– जयपाल सिंह पूनियां, एम.ए. इतिहास,
वन मंडल अधिकारी (सेवानिवृत)

जाट क्षत्रिय हैं और उनके क्षत्रिय होने के अनेकों प्रमाण एतिहासिक पुस्तकों में भी पाये जाते हैं। किसी जाति अथवा मनुष्य की बहादुरी के आधार पर ही उसको क्षत्रिय कहा जा सकता है। आदिकाल से वर्तमान काल तक जाटों की वीरता के विषय में अनेक देशी व विदेशी इतिहासकारों ने अनेक ग्रन्थ व पुस्तकें लिखी है और जाटों की वीरता की भूरी–भूरी प्रशंसा की है। किसी भी एतिहासिक पुस्तक को उठा के देख लों उसमें यही लिखा मिलेगा कि जाट एक बहादुर व लड़ाका जाति है। जाटों ने आदिकाल से ही अनेकों युद्ध लड़े और युद्धों में हार–जीत तो होती रहती है। किसी भी पुस्तक व ग्रन्थ में कहीं यह लेख नहीं मिलेगा कि फलाँ युद्ध में जाट पीठ दिखा कर भागे हो या उन्होंने कहीं शत्रु से डर कर हथियार डाले हों। वर्णन कट कर मर जाने में ही जाटों ने हमेशा अपनी शान समझी है। जाटों की वीरता के अनेकों प्रमाण मिलते हैं। सभी प्रमाण तो लिखना मेरे बलबुते की बात नहीं हैं। परन्तु, फिर भी जाटों के क्षत्रिय होने के कुछ प्रमाण में आपको ध्यान में लाना चाहुंगा जो कि समय समय पर अनेक इतिहासकारों ने अपनी पुस्तकों में इन्द्राज किए है:–

1. जाटों के क्षत्रिय होने के कुछ प्रमाण निम्न प्रकार से है :– युनानी इतिहासकार हैरोडोटस ने अपनी पुस्तक में इन्द्राज किए हैं कि जब–जब जाटों में एकता हुई तब तब संसार की कोई भी जाति इनके सामने नहीं टिक सकी। महान युनानी इतिहासकार थ्यूसिडियस ने लिखा था कि एशिया तथा यूरोप में किसी भी राष्ट्र में ऐसी कोई भी जाति नहीं थी जो सिथियन जाटों के मुकाबले में खड़ी रह सके।

2. महान सम्राट सिकन्दर ने अपना विजयी अभियान पहले एशिया में ही कूच किया और 328–327 ईसा–पूर्व में सोग्डियाना पर आक्रमण कर दिया। यह सिंथिया देश का एक प्रान्त था जिस पर सिंथियन जाटों का ही साम्राज्य था। इस युद्ध में सिकन्दर को जाटों ने करारी हार दी थी। इसमें सिकन्दर की सेना की एक डिविजन नफरी सिथियन जाटों ने मौत के घाट उतार दी थी। जिसके कारण सिकन्दर भी बीमार पड़ गया था। लगभग 6 मास तक उसकी सेना ने लड़ने से मना भी कर दिया था और सिकन्दर ने वहां से 30000 सिंथियन जाटों को अपनी सेना में भर्ती भी किया था। सिकन्दर स्वयं भी कहता था कि मेरी रंगों में भी जाट खून दौड़ रहा है क्योंकि सिकन्दर की माता औलाईम्पीयस देश के जाट राजा की पुत्री थी जो कि वहां की जाट रानीयों की ही औलाद थी।

3. दसवीं शताब्दी में स्पेन के अन्तिम जाट सम्राट के पौत्र अलवारो ने अपने आपको ऊंचे सत्तर की पुरानी (जाट) गेटी अर्थात जाट जाति का वंशज कहा है। अलवारो कहता था कि मैं उस जाट जाति से संबंधित हूं जिनके बारे में सम्राट सिकन्दर ने कहा था कि जाटों से बचो क्योंकि सिंथियन जाटों ने सिकन्दर को करारी हार दी थी। जूलियस सीजर जाटों से कांप गया था क्योंकि सम्राट विक्रमादित्य ने उसको रोम में जाकर बन्दी बनाया और भारत लाकर उज्जैन की सड़कों पर नंगे पांव घुमाया था। सम्राट सायरस जाटों से डरा था। सम्राट सायरस महारानी तोमरिस दहिया के हाथों मारा गया था और स्पेन के सम्राट जेरोम ने जाटों के बारे में कहा था कि उनके आगे सींग होते हैं इसलिए उनसे दूर रहो। एक

प्राचीन और प्रसिद्ध इतिहासकार पोम्पोनियस ने सिंथियन जाटों के बारे में लिखा था कि वे युद्ध तथा शत्रु की हत्या से प्यार करते हैं।

4. कर्नल जेम्स टॉड लिखते हैं कि आज के जाटों को देखकर विश्वास नहीं होता कि ये जाट उन्हीं प्रचण्ड वीरों की संतान है जिन्होंने कभी एशिया और यूरोप को हिला कर रख दिया था।

5. शिवदास गुप्ता का कथन है कि "जाटो ने तिब्बत, युनान, अरब, ईरान, तुर्कीस्तान, जर्मनी, साईबेरिया, स्कैन्डनविया, इंग्लैड, रोम व मिश्र आदि में दृढ़ता और साहस के साथ शासन किया था और वहां की भूमि की बंजरता को खत्म करके उसको काफी उपजाऊ बना दिया था।

6. 23.11.1967 को बरेली में जाट रेजिमैंट को ध्वज प्रदान करते हुए, भारतवर्ष के राष्ट्रपति डॉ० जाकिर हुसैन ने कहा था कि 'जाटों का इतिहास भारत का इतिहास है और इसी तरह जाट रेजिमैंन्ट का इतिहास भारतीय सेना का इतिहास है।

7. श्री सी.वी. वैद्य ने लिखा है कि जाटों ने अपनी लड़ाकू प्रवृति को अब तक कायम रखा है।

8. झूंझनू जाट महासभा के अधिवेशन में सन् 1931 ई. में एक अंग्रेज योद्धा एफ.एस. यांग जो कि आई.जी. पुलिस थे ने अपने सम्बोधन में कहा था कि जाट सच्चे क्षत्रिय है हमने जर्मन युद्ध में उनको बाखूबी परखा है जाट युद्ध के मैदान में मरना और मारना जानते हैं। अंग्रेजी सरकार की तरफ से जाटों की पल्टन को रायल जाट पल्टन की उपाधि दी गई थी। उन्होंने कहा कि जाट बहादूरी के साथ ही सच्चे ईमानदार और बात के पक्के होते हैं। जाट कभी दगा नहीं देते क्योंकि मैंने स्वयं कुछ जाटो को परखा है वे खरे यानि पूरे उतरे हैं।

9. तैमूरलंग ने कहा था कि जाट एक अत्यन्त मजबूत जाति है देखने में दैत्य, संख्या में टिड्डियों की तरह बहुत संख्या वाले और शत्रुओं के लिए सच्ची महामारी हैं हरिद्वार की लड़ाई में 7 फुट लम्बे विशालकाय दादा हरबीर सिंह गुलिया जोकि पंचायती सेना के उपसेनापति थे ने तैमूरलंग की छाति में भाले से ऐसा वार किया था कि तैमूरलंग उस घाव से उभर नहीं पाया और अन्त में उसने समरकन्द जाकर मृत्यु को गले लगा लिया था।

10. प्रसिद्ध नेता भाई परमानन्द जी ने जाटों के बारे में लिखा है कि पंजाब में खालसा पंथ की नींव रखना और राज्य स्थापित करना तमाम पठान जातियों को अपने अधीन करना, अफगान पठानों को कई बार हराना ये जाट ही ऐसा कर सकते थे किसी अन्य के बस का काम नहीं था।

11. जाट भारतीय राष्ट्र की रीढ़ है, भारत को इस साहसी व पराक्रमी जाति से आज भी बहुत आशाएं हैं। भारतीय सेना में आज भी सभी जाटों को मिलाकर देखें तो अधिकारी व कर्मचारी 40 प्रतिशत जाट है।

12. "मोहम्द गजनी जिहाद पुस्तक" में हसन निजामी को विवश होकर लिखना पड़ा था कि राजा विजयराव जाटों की फौज महमूद की फौज के साथ ऐसी वीरता से लड़े कि इस्लामियों के छक्के छुड़ा दिये थे। इस युद्ध में महमूद ने अपनी हिम्मत छोडकर दरगाह में घूटने टैक दिए थे (डॉ० देशराज लेखक पृ. 213)

जाट जाति में अभी भी कई बाते ऐसी है कि जो प्राचीन चंद्रवंशी क्षत्रियों जैसे कौरव, पाण्डवों से मेल खाती है।

13. तमिल भाषा में "मणि मेखला" नामक ग्रन्थ में जाट जाति के अभियान और शौर्य का वर्णन किया हुआ है जिससे उनका क्षत्रिय और बहादुर होना सिद्ध होता है।

14. बौध ग्रन्थ अभियान में जाट जाति की विशेषता का वर्णन है।

15. जिन वंशों के जाट संघ में निशान हैं, वे भारत के वैदिक रामायण और महाभारत कालीन राजवंश है और उनके वर्णन से सारा आर्य साहित्य भरा पड़ा है। जाट मिट सकते हैं किन्तु अपने शत्रु के सामने झुक नहीं सकते।

16. एक हरियाणवी जाट की गर्दन टूट सकती है लेकिन झुक नहीं सकती। हिन्दी सत्याग्रह आन्दोलन के समय आचार्य भगवान जी ने कहा था।

17. जाटों को मुगलों व पठानों ने परखा और अंग्रेजो ने उनके पैंतरे देखे। देहली, काबूल भरतपुर, पुष्कर, पानीपत और जर्मनी और फ्रांस में अपने खून की गर्मी दिखाई तथा कटार व कलम से लिखकर सिद्ध किया कि जाट क्षत्रिय है। गजनवी और तैमूर के दांत खट्टे किए मोहम्मद गोरी को मारा जिन्हें सी.वी. वैद्य जैसो ने वैश्य कहा है। काबूल के पठानों और सिकन्दर को कोई कौम खटकी तो ये जाट कौम ही खटकी थी क्योंकि जाटों ने उनके सभी मनसूबों पर पानी फेरा था।

18. हिस्ट्री ऑफ जाटस के लेखक कालिका रंजन कानूनगो ने जाटों के बारे स्पष्ट तौर पर लिखा है कि तलबार और हल चलाकर खेती करने में जाट बराबर के माहिर थे। इनके मुकाबले में मेहनत और साहस रखने वाली हिन्दुस्तान में कोई भी जाति नहीं थी। जाट बिना किसी भेदभाव के अपने भाई की विधवा से शादी कर लेते है। यह प्रथा जाटों में वैदिक काल से ही चली आ रही है। कानूनगो जो आगे लिखते हैं कि गजनवी, गौरी, नादिरशाह या अब्दाली के साथ किए गए संघर्ष से जाटों के चरित्र का पता चलता है।

19. नवाब समसामुदौला नवाजखां ने जाटों के कार्यों के आधार पर लिखा है कि ये पाषाण हृदय तथा लूटमार के माल को छीनने में मस्त रहने वाले हैं। वास्तविकता यह है कि इनकी वीरता का खौप दुश्मन को इतना रहता है कि दुश्मन इनके बारे में एक कहावत कहते थे कि "जाट मरा तब जानियों, जब तेहरामी हो जाये"।

20. भारत का इतिहास जब से प्राप्त है उसी समय से यह पता चलता है कि विदेशी आक्रमणकारी चाहे सिकन्दर हो चाहे मुगल हो देश की रक्षा करने हेतु हमेशा जाटों ने ही तलवार उठाई।

21. जाटों में आज भी भोलापन तथा अल्हड़पन देखा जाता है जाटों को प्रेम से वश में करना जितना आसान है उतना ही आंखे दिखा कर वश मे करना कठिन है। सम्राट अकबर ने कहा था कि जाटों को प्रेम से ही वश में किया जा सकता है। जाट सामाजिक तथा धार्मिक दृष्टि से अन्य हिन्दुओं की बजाय ज्यादा स्वतन्त्र है। लड़ना उनका पेशा है। अपनी आन–बान और शान की खातिर मर मिटना जाटों का गहना है।

22. जब महाराजा रणजीत सिंह 1805 ई० में भरतपुर के सम्राट थे तब अंग्रेजों ने लार्ड लेक के नेतृत्व में भरतपुर पर चढ़ाई कर दी और तीन तरफ से भरतपुर का किला घेर लिया था। रूक–रूक करके चार बार किले पर लेक द्वारा हमला किया गया 6 मास तक अंग्रेज किले का घेरा डाले रहे। जाटों ने अंग्रेजों के दांत खट्टे कर दिए। लार्डलेक भारत में कहीं भी नहीं हारा था लेकिन जाटों को नहीं हरा सका क्योंकि जाटों की वीरता को देखकर अंग्रेजी सेना के पैर उखड़ गए थे और लार्डलेक ने विवश होकर किले का घेरा उठाना पड़ा था लेकिन बड़े खेद की बात है इतिहासकार कर्नल जेम्सटॉड ने अपनी पुस्तक में लार्डलेक की इस हार का और जाटों की बहादुरी का कहीं भी जिक्र नहीं किया क्योंकि भारत में अंग्रेजो की यह पहली और आखरी हार थी।

23. महाराजा कृष्ण सिंह भरतपुर नरेश के सन् 1925 ई. में पुष्कर में जाट महासभा के अधिवेशन में दिए भाषण के कुछ अंश निम्न प्रकार से हैं। उन्होंने कहा था कि "मुझे इस बात का बहुत घमण्ड है कि मेरा जन्म जाट जैसी निडर क्षत्रिय जाति में हुआ है। हमारी जाति की बहादुरी के चरित्रों से इतिहास भरा पड़ा है। हमारे पूर्वजों ने कर्तव्य धर्म के नाम पर मरना सीखा था और इसी बात के पीछे हमारा अब तक सिर ऊँचा है।

24. हमारे पूर्वजो ने जो वचन दिए, प्राणों के जाते–जाते उनका निर्वाह किया था। हमारी तेजस्विता का वर्णन आज भी संसार करता है। मुझे विश्वास है कि हमारी जाति की यश पताका शीघ्र ही संसार भर में फैहराने लगेगी। प्रथम व दुसरे विश्व युद्ध में जो जाट सैनिक अंग्रेजो की फौज में भर्ती थे उनके शौर्य का यश आज भी संसार में व्यापत है। उनके शौर्य से ही अंग्रेजो ने प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध जीते थे। प्रथम विश्वयुद्ध में 6 जाट रेजिमैंन्ट जर्मन सेना के विरूद्ध फ्रांस में लड़ी थी। इसमें सभी जवान 6–6 फुट लम्बे और शक्तिशाली थे" जब ये जवान, जाट बलवान, जय भगवान का रणघोष बोलकर शत्रु सेना पर टूट पड़ते थे तो शत्रु सेना मोर्चे छोड़कर भाग जाती थी क्योंकि ये गोली चलाने की बजाय शत्रु सेना के सीने में संगीन घोंपकर मोर्चे से ऐसे बाहर फैंक देते थे जैसे किसान जेली से खलिहान में गेहूं की पूली फैकता है। प्रथम विश्वयुद्ध में इस रेजिमैंन्ट के कर्नल व जर्नल साहब ने ये कहा था कि किस–किस को विक्टोरियाक्रास दिलायें क्योंकि इस रेजिमैंन्ट के सारे जवान विक्टोरियाक्रास के हकदार हैं। दुसरे विश्वयुद्ध में फील्ड मार्शल रोमेल साहब द्वारा जाटों की बहादुरी की याद दिलाते हुए कहा था कि "उत्तरी अफ्रीका में जमकर लड़ने में जाट सबसे अच्छे लड़ाका हैं"। उन्होंने कहा था कि "वे सचमुच बहादुर थे, जैसा कि उन्होंने लद्धाख में भी दिखा दिया था"। चाहे 1962 भारत चीन युद्ध हो चाहे 1965, 1971 भारत पाकिस्तान युद्ध चाहे कारगिल युद्ध हो सभी जाटों की वजह से फतेह हुए है। 1962 के युद्ध के बाद पंडित जवाहरलाल नेहरू ने विदेशियों की इस बात के कहने का कि चीनी सेना ज्यादा ताकतवर है, यह उत्तर दिया था कि चीनी ऐसे बहादुर थे तो लद्धाख और चुशूल हवाई अड्डे को वे क्यों नहीं जीत पाए? क्योंकि हमारी सेना ने चीनी सेना के दांत खट्टे कर दिए थे। 1962 में हमारी सेना नहीं हारी थी क्योंकि श्री नेहरू ने हमारी सेना को पीछे हटा लिया था। यह कहकर कि वहां तिनका भी पैदा नहीं होता इसलिए पीछे हटो और लद्धाख का 38000 वर्ग किलोमीटर का क्षेत्र 1962 में नेहरू की गलती से चीन ने दबा लिया था।

25. 1965 की लड़ाई में 3 जाट बटालियन के डॉ. एस.जी. रेड्डी ने कहा था कि घायल जवानों की मरहम पट्टी करते समय मैंने देखा कि कोई भी जवान आह कहते नहीं सूना। पाकिस्तानी कैदी ले० कर्नल गोलवाला ने कहा था कि "जाटों को रोकना हमारे लिए असम्भव था"।

26. जाटों का मोटो है कि "जब तक जीवन है वीरता से रहना मृत्यु आए तो युद्ध में ही आए और यदि आए तो छाती में गोली खाकर पीठ में नहीं ताकि स्वर्ग मिले"। विदुर नीति में भी ऐसा ही लिखा है कि अपनी मातृ भूमि की रक्षा करते हुए लड़कर मरने वाले जवानों को स्वर्ग ही मिलता है।

27. नेता जी सुभाष चन्द्र बोस की फौज आई.एन.ए. में भी 50 प्रतिशत से अधिक संख्या जाटों की ही थी जिससे अंग्रेज डर गए थे और उन्होंने ने भारत को आजाद करने का निर्णय

शीघ्र लेना पड़ा था क्योंकि उन्होंने जाटों की वीरता दोनों विश्वयुद्धों में देख ली थी।

वास्तविकता तो यह है कि किसी भी एतिहासिक पुस्तक को देखें तो प्राचीन काल से अब तक जाटों की वीरता के कारनामों से ग्रन्थ के ग्रन्थ भरे पड़े हैं। जोकि सब के सब यहां लिखना मुनासिब नहीं है क्योंकि यह एक छोटा सा प्रयास सूर्य को दीपक दिखाने के माफिक है या यूं कह लिजिये कि सब के सब लिखना असम्भव है। एक कवि ने बहुत ठीक कहा है कि "तेरी तकदीर की देती है गवाही दूनिया। तेरी हस्ती की शहादत में है रचना तेरी।। "जाटों की वीरता का साक्षी सारा संसार है।" जिसकी पुष्टि इनके बहादुरी के कारनामों से होती है।

इन थोड़े से उपरोक्त उदाहरणों से आप समझ जाएंगे कि अज्ञानी व ईर्ष्यालु पुरूष जिन्होंने जाटों के लिए शुद्र, मलेच्छ, पतित, वैश्य या नास्तिक आदि शब्दों का प्रयोग किया कि जाट सही मायने में सच्चे देशभक्त और सचमुच में क्षत्रिय हैं क्योंकि प्राचीनकाल से अब तक जाटों ने देश भक्ति व क्षत्रिय होने के अपनी मातृभूमि की रक्षा करने हेतु अनेकों बार बलिदान देकर अपने आप को क्षत्रिय होने का सबूत दिया है। इन सबसे प्रमाणित होता है कि जाटों से बड़ा क्षत्रिय आज भी संसार में कोई नहीं है।

डॉ0 एम.एस. मलिक एक महान शख्सियत, आई.पी.एस., भूतपूर्व डी.जी.पी.(सेवानिवृत)

– बी.एस. गिल, सचिव
जाट सभा

मानवता व सामाजिक भाईचारा की प्रखर आवाज, उच्चकोटि के विचारक व लेखक डॉ० एम.एस. मलिक जी का खेल व सामाजिक क्षेत्र में अतुल्य योगदान है। भारतीय सेना व पुलिस प्रशासनिक सेवा के शीर्ष पदों पर रहकर देश की सेवा की। "मानव अधिकार व सुरक्षा बल" शोध पर Ph.D. प्राप्त की। निड़ानी का खेल स्कूल आपकी उच्च सोच का परिचायक है। चण्डीगढ़ व पंचकूला एवम् कटरा (जम्मू–निर्माणधीन) बहुउपयोगी भवन आपके अच्छे प्रयासों की देन है। हरियाणा के गांव शामलों कलां (जीन्द) में16 अक्टूबर, 1946 (01–01–1947) को चौ० भरत सिंह गलिक के पावन संस्कारी आंगन में एक बालक ने जन्म लिया, जिसने आगे चलकर अपने गांव, जिला, प्रदेश व देश का नाम विश्व स्तर पर गौरवान्ति किया जिसे समस्त विश्व डॉ. महेन्द्र सिंह मलिक के नाम से सम्मानपूर्वक जानता है।

प्रारम्भिक शिक्षा गांव के ही विद्यालय में तथा उच्च शिक्षा राजकीय महाविद्यालय जीन्द तथा कुरुक्षेत्र में प्राप्त की।ग्रामीण आंचल से जुड़े होने के कारण कुश्ती में स्वाभाविक रूप से रूचि रही जैसा कि उस समय अधिकांश खेल में रूचि रखने वाले विद्यार्थी अध्ययन में औसतन ही रहते थे। इस भ्रांति पूर्वक चुनौती को स्वीकार करते हुए डा. महेन्द्र सिंह मलिक ड़िघाना उच्च विद्यालय के कुल 42 विद्यार्थियों में से उत्तीर्ण मात्र 2 विद्यार्थियों में से एक रहे। लग्न के पक्के डॉ. महेन्द्र सिंह मलिक जब महाविद्यालय में प्रवेश हेतू गये तब तत्कालीन प्राचार्य श्री एस.एन. राव ने उनकी शिक्षा सम्बन्धि उपलब्धि व भविष्य की शिक्षा के लिए ताना मारा। धुन व लग्न के पक्के छात्र महेन्द्र सिंह मलिक ने उसी दिन उसे ताना या बोली को चुनौती के रूप में लिया व शिक्षा के क्षेत्र में कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा और अपनी छात्र जीवन की उपलब्धियों से न केवल तत्कालीन प्राचार्य महोदय को अपितु पूरे परिवेश को सुखद आश्चर्यचकित कर दिया।

शिक्षा के दम पर ही उस समय सन् 1966 में अपनी मेहनत से 2nd Lieutinent के रूप में मर्ती हुए। दिनांक 23–6–1968 को 2nd Lieutinent के रूप में सेवा प्रारम्भ करने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

इसके बाद उन्होंने आईएएस की परीक्षा दी जिसमें इनको आई.पी.एस. चयनित होने की सफलता मिली। इसके बाद उन्होंने हरियाणा राज्य कैंडर मिला, जहां ये पहले एस.पी. फिर एस.एस.पी के पदों पर रहे। बाद में इनको हरियाणा का डी.जी.पी. लगा दिया गया। इन्होंने अच्छे से प्रशासन चलाया और राज्य में चैन अमन व शान्ति स्थापित की। इनकी अच्छी सेवाओं व अच्छी कार्यप्रणाणी के लिये उल्लेखनीय कार्यों के लिए कभी महामहिम राष्ट्रपति महोदय तो कभी माननीय प्रधानमन्त्री जी द्वारा स्वाधीनता दिवस व गणतन्त्र दिवस पर सम्मानित किया गया जो कि पूरे क्षेत्र के लिए गर्व की बात है।

सेवा कार्य के ऐसे दायित्वों के साथ–साथ खेलों विशेष रूप से कुश्ती के प्रति समर्पण व यूँ कहिये कि कुश्ती विकास के लिए जनून लगातार रहा और जब भी अवसर मिलता अथवा परिस्थितियां अनुकूल होती अपने इसी जज्बे और जन्नुन के कारण कुश्ती के विकास के लिए कुछ न कुछ करते ही रहते हैं।

इसी के अनुरूप गांव निडाणी जिला जीन्द में युवा सरपंच चौ दलीप सिंह के नेतृत्व में मलिक साहब ने चौ. भरत सिंह, मैमोरियल खेल स्कूल निड़ानी तथा भाई सुरेन्द्र सिंह मैमोरियल कन्या विद्ययालय की स्थापना की।

डॉ० महेन्द्र सिंह मलिक, पूर्व पुलिस महानिदेशक, श्रीमती कृष्णा मलिक अध्यक्षा के अनुभवी और कुशल मार्गदर्शन व श्री दलीप सिंह पूर्व सरपंच के सतत् निश्काम सेवाभाव के फलस्वरूप दोनों स्कूलों के छात्र/छात्राओं ने पढ़ाई के साथ राष्ट्रीय/अर्न्तार्ष्ट्रीय और ओलम्पिक खेलों में मैडल जीत कर लाए। जिन के लिए इन खिलाड़ियों में तीन को भारत के राष्ट्रपति द्वारा अर्जुन अवार्ड से नवाजा गया।

डॉ. महेन्द्र सिंह मलिक जी के मार्गदर्शन में दोनों स्कूल के छात्र/छात्राओं व खिलाड़ियों के अभ्यास रूपी तपस्या करते हुये न केवल मां भारती के क्रीड़ा ध्वज में विश्व प्रतियोगिताओं के 70 से अधिक स्वर्ण पदक लगाकर आभासित किया है, अपितु इन्हीं विद्यालयों के खिलाड़ियों व मेधावी छात्र–छात्राओं ने अपनी प्रतिभा के आधार पर Haryana Police, जल–थल नभ तीनों सेनाओं में, अर्द्ध सैनिक बलों CRPF, CISF, BSF, Indo-Tibetin Border Police, Punjab Police, Air Lines, Indian Railways आदि अनेक संस्थाओं में 1000 से ज्यादा सेवारत रहते हुए राष्ट्र के सशक्तिकरण में अपना अतुलनीय योगदान दे रहे है।

उपरोक्त संस्थाओं को कुशलपूर्व मार्गदर्शन के साथ–साथ हाल ही में एक डिफैन्श ट्रैनिंग संस्था भी खोली हे जिसके पहले ही बैच में 15 छात्र एन.डी.ए में भर्ती हो गए हैं। पूर्व महानिदेशक पुलिस, हरियाणा आज भी कई वर्षो से जाट सभा चण्डीगढ़/पंचकूला तथा चौ० छोटूराम सेवा सदन, कटड़ा, जम्मू के एक सफल प्रधान होने के साथ–साथ अन्य कई समाजिक व लोकहित संस्थाओं तथा किसान हितकारी संगठनों के भी प्रधान/अध्यक्ष है। प्रधान की अच्छी और साकारात्मक सोच के कारण ही सभी संस्थाएं सफलतापूर्व कार्यरत व प्रगतिशील हैं। हम सभी आप के आर्दश व्यवहार, सेवा कार्यों व उच्च विचारों की सहराना करते हुये दीर्घायु की कामना करते है।

कहावत है कि प्रतिभा किसी के छुपाये नहीं छुपती है। इसी के अनुरूप डॉ. एम. एस. मलिक जी की संगठनात्मक नेतृत्व की प्रतिभा व क्षमता को देखते हुए उच्च से उच्चतर एवं उच्चतम दायित्व कुश्ती कल्याण के लिए सौंपे गये जिनमें वर्ष 1985 में हरियाणा कुश्ती संघ का प्रधान, वर्ष 1987 में भारतीय कुश्ती संघ के सम्मानित वरिष्ठ उपाध्यक्ष, वर्ष 2001 में प्रतिष्ठित भारतीय कुश्ती संघ के माननीय प्रधान/अध्यक्ष, एशियन कुश्ती संघ के उप–प्रधान विश्व कुश्ती संघ के सम्मानित सदस्य, कुश्ती के अतिरिक्त अन्य खेल हॉकी–वॉलीवाल, एथलेटिक्स आदि खेलों के संगठनों में महत्वपूर्ण दायित्व मिला जिसका डॉ. साहब ने सदैव की भांति सफलतापूर्वक निर्वहन किया। इस प्रकार डॉ० महेन्द्र सिंह मलिक, आई.पी.एस./डी.जी.पी. (सेवानिवृत) अपने सारे जीवन में हर स्टेज पर समाज के लिये विशेषकर जाट समाज क लिये एक आर्दश व्यक्ति साबित हुए हैं। इन्हें अनुशासन में रहना भी बहुत पसन्द है इसलिये जाट सभा के साथ–साथ अन्य संगठन भी इनकी देखरेख में अनुसाशानात्मक पद्धति पर चल रहे हैं।

चौधरी महेंद्र सिंह टिकैत.एक विश्वसनीय शख्सियत

– लक्ष्मण सिंह फौगाट

भारत के किसानों के मसीहा चौधरी महेंद्र सिंह टिकैत बेदाग, स्पष्टवादी, दबंग छवि की शख्सियत के व्यक्ति थे, जिन्होंने एक मौजूदा प्रधानमंत्री से रिश्वत से जुड़ा सवाल पूछ लिया था। वो ऐसे किसान नेता थे जो सरकारों के पास नहीं जाते थे, सरकारें खुद चलकर उनके पास आती थीं...

पी. वी. नरसिम्हा राव सरकार के दौरान हर्षद मेहता कांड हुआ, जिसने राजनीतिक गलियारे में तूफान ला दिया। चौधरी साहब की नरसिम्हा राव जी से ठीक ठाक दोस्ती थी। वे जब चाहते थे मिल लेते थे। उस दौरान कांग्रेस पार्टी राव साहब में आस्था व्यक्त कर रही थी और समर्थकों की भीड़ को तो ऐसा करना ही था। चौधरी साहब उसी दौरान किसानों की समस्या को लेकर प्रधानमंत्री से मिले तो उनसे सीधे पूछ लिया कि क्या आपने एक करोड़ रुपया लिया था ?

आजादी के बाद भारत की किसान राजनीति के वे सबसे बड़े किसान नेता थे। वैसे तो आजादी के पहले1917 के बाद कई किसान आंदोलन हुए और महात्मा गांधी, पंडित जवाहर लाल नेहरू, सरदार वल्लभ भाई पटेल से लेकर स्वामी सहजानंद और प्रो. एनजी रंगा जैसे दिग्गज भी उससे जुड़े रहे। आजादी के बाद तमाम इलाकों में किसान संगठन बने और किसानों के कई बड़े नेता उभरे। उस समय किसानों के हितों की कोई पूछताछ नहीं कर रहा था। उन्होंने ऐसे दौर में किसानों को संगठित किया और उनकी आवाज बने जिस समय किसानों को संगठन की सबसे अधिक जरूरत थी। वे जीते जी किसानी की मिशाल बन गए थे। किसानों का ये दिग्गज नेता अपनी सादगी के लिए भी जाना जाता था, वो किसानों के बीच बैठकर खाना खाते थे, आंदोलनों के दौरान भी मंच के बजाए किसानों के बीच बैठते थे। मेरठ आंदोलन

से लेकर दिल्ली के बोट क्लब की महापंचायत तक किसान समूह के बीच मिलकर संघर्ष किया।

चौधरी टिकैत ही है जो ईमानदारी किसानों के लिए खड़े रहे किसानों के आगे कई बार सरकारों को झुकने पर मजबूर करने वाले किसान नेता के रूप मे जाने जाते थे। महेंद्र सिंह टिकैत उदारीकरण की आंधी से किसानों को काफी हद तक बचाया। चौधरी टिकैत के नेतृत्व में किसान आंदोलन ने दो अहम उपलब्धियां हासिल की है। पहला यह कि किसानों के संगठन मे उदारीकरण की आंधी में खेती बाड़ी और भारत के कृषि क्षेत्र को एक हद तक बचा लिया। नीतियों में बदलाव के नाते यह क्षेत्र बेशक प्रभावित हुआ लेकिन ऐसा नहीं जैसा विश्व व्यापार संगठन या बड़े देश चाहते थे। भारत सरकार को किसानों की समस्याओं के नाते कई मोरचों पर झुकना पड़ा। इसके लिए टिकैत दिल्ली ही नहीं विदेश तक आवाज उठाने पहुंचे और जब एक मुस्लिम युवती को न्याय दिलाने के लिए छेड़ा आंदोलन दूसरी अहम बात यह थी कि टिकैत ने उत्तर प्रदेश के पश्चिमी अंचल और समग्र रूप से पूरे राज्य में किसानों को जाति और धर्म में बंटने नहीं दिया। किसान आंदोलन के सबसे अहम पड़ाव यानि करमूखेड़ी बिजलीघर पर हुए पुलिस गोलीकांड में दो नौजवानों जयपाल और अकबर की शहादत को भाकियू ने कभी नहीं भुलाया। उनके नेतृत्व में हुए अधिकतर विशाल पंचायतों की अध्यक्षता सरपंच एनुद्दीन करते थे और मंच संचालन का काम गुलाम मोहम्मद जौला 1967 में मेरठ में भयावह सांप्रदायिक दंगे हुए थे लेकिन टिकैत ने ग्रामीण इलाकों में एकता की मिसाल जलाए रखी। विरोधी हमेशा भारतीय किसान यूनियन (Bhartiya Kisan Union) को जाटों का संगठन बताते रहे, लेकिन अगर जमीन पर आप जाकर देखें तो पता चलता था कि जाट ही नहीं उस जमावड़े में समाज की पूरी धारा समाहित होती थी। उनका सफर आम किसान से महात्मा बनने का सफर था। उनकी आवाज को हिंदू मुसलमान सभी सुनते थे और मानते थे। 1989 में मुजफरनगर के भोपा क्षेत्र की मुस्लिम युवती नईमा के साथ न्याय के लिए चौधरी साहब ने जो आंदोलन चलाया उसने एक अनूठी एकता का संकेत दिया। हुक्का भी टिकैत साहब का जीवनभर साथी रहा। चौधरी टिकैत के जीवन का सफर कांटों भरा 1935 में मुजफरनगर के सिसौली गांव में जन्मे चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत का पूरा जीवन ग्रामीणों को संगठित करने में बीता। भारतीय किसान यूनियन के गठन के साथ ही 1986 से उनका लगातार प्रयास रहा कि यह अराजनीतिक संगठन बना रहे। मेरठ के घेराव ने किसानों का संगठन और एकता की परिधि को व्यापक बना दिया और उनको एक ईमानदार नायक मिल गया था, जिसके साथ देश के करीब सारे छोटे बड़े किसान जुड़ कर एक झंडे तले आने के लिए उतावले थे। किसानों के हकों के सवाल पर राज्य और केंद्र सरकार से टिकैत की बार बार लड़ाई हुई। लेकिन उन्होंने आंदोलन को अहिंसक बनाए रखा। उनकी राह गांधी की राह थी और सोच में चौधरी चरण सिंह से लेकर स्वामी विवेकानंद तक थी। 110 दिनों तक चला रजबपुर सत्याग्रह हो या फिर दिल्ली में वोट क्लब की महापंचायत, फतेहगढ़ केंद्रीय कारागार हो या फिर दिल्ली की तिहाड़ जेल उनका जाना, हर आंदोलनों ने किसान यूनियन की ताकत का विस्तार किया। मंच पर नहीं हुक्का गुड़गुड़ाते भीड़ में बैठते थे टिकैत साहब टिकैत, दिल्ली–लखनऊ कूच का ऐलान करते तो सरकारों के प्रतिनिधि उनको मनाने रिझाने सिसौली रवाना होने लगते। लेकिन टिकैत जो चाहते थे करते वही थे। प्रधानमंत्री से लेकर मुख्यमंत्री तक उनके फोन को तरसते थे लेकिन यह उनकी ताकत का असर था जो उनकी सादगी, ईमानदारी और लाखों किसानों में उनके भरोसे के कारण थी।

आंदोलनों में भीड़ को नियंत्रित करना सरल नहीं होता। लेकिन चौधरी साहब ने आंदोलनों को अलग तरीके से चलाया। गांव से महिलाएं खाने पीने की सामग्री, हलवा, पूरी, छाछ, गुड़ इतनी मात्रा में भेजती थीं कि किसान ही नहीं पुलिस, पत्रकार और आम गरीब लोग सब खा पी लेते थे, कम नहीं पड़ता था। हर आंदोलन में टिकैत ने पूर्व सैनिकों को भी जोड़ लेते थे। मेरे मित्र और किसान आंदोलन के तमाम अहम पड़ाव को करीब से देखने वाले अशोक बाल्यान, नरेश सिराही से लेकर तमाम किसान हितैषियों को इस आंदोलन ने पैदा किये। हर आंदोलन में चौधरी टिकैत ने किसानों के वाजिब दाम को केंद्र मे रखा। जीवन भर वे किसानों की लूट के खिलाफ सरकारों को आगाह करते रहे। उनका यह कहना एक हद तक सही है कि अगर 1967 को आधार साल मान कर कृषि उपज और बाकी सामानों की कीमतों का औसत निकाल कर फसलों का दाम तय हो तो एक हद तक किसानों की समस्या हल हो सकती है। चौधरी देवीलाल से दोस्ती चौधरी साहब की एक बड़ी खूबी यह भी थी कि वे दोस्तों के दोस्त थे। अपना कितना भी नुकसान हो जाये इसकी परवाह नहीं करते थे। जब चौधरी देवीलाल को उप प्रधानमंत्री पद से बर्खास्त किया गया तो उनके हाथों

मंत्री और मुख्यमंत्री पद तोहफे में पाने वाले भी दुबक गए थे। केवल चौधरी टिकैत थे जो अस्पताल में होने के बावजूद लगातार उनके पक्ष में खड़े रहे। वे केंद्र की सत्ता से इसके बावजूद टकराये कि उनको रोकने के लिए सरकार ने सभी संभव प्रयास किए थे। वे किसानों और ग्रामीण भारत के सच्चे हितैषी और दुरदर्शी थे। 15 मई 2011 को 76 साल की आयु में उनका निधन हुआ लेकिन किसान आंदोलन आज भी उनकी ही तरफ देखता है। उनको आज भी एक किसान मजदूर व कामगार के मसीहा के रूप में याद किया जाता है।

15 मई 2011 को 76 साल की आयु में उनका निधन हुआ। 15 मई को चौधरी साहब की पुण्य तिथि के रूप में याद किया जाता है। आगे उनके लड़के राकेश चौधरी टिकैत के नेतृत्व में भारत में तीन काले कृषि कानूनों के विरोध में किसानों का जो आंदोलन खड़ा हुआ उसने भारत ही नहीं पूरी दुनिया पर असर डाला। इस एतिहासिक आंदोलन में चौ. साहब के लड़के ने आखिर पड़ाव तक एक दबंग सिपाही की तरह किसानों का हौसला बढ़ाया व मार्ग दर्शन किया जिस कारण हठधर्मी सरकार को झुकना पड़ा। वही अकेला आंदोलन था, जिसमें विदेशी मीडिया हैरानी के साथ मेरठ, गंगा नहर के किनारे भोपा, सिसौली, शामली और दिल्ली बोर्डर पर पहुंच कर इस संगठन और करिश्माई व्यक्तित्व के तमाम पहलुओं की तलाश करती हुई पायी गयी। ऐसे महान किसानों के मसीहा की जयन्ती पर हम सभी का सत्–सत् नमनः।

गीता पराग- एक पठनीय पुस्तक

& M, jktorh eku

डॉ वीरेंद्र सिंह गोदारा द्वारा हाल में ही लिखित पुस्तक 'गीता पराग' का लोकार्पण 24 नवंबर 2018 यानी चौधरी छोटूराम जी की जयंती के अवसर पर राजस्थान के कोटा में गीताश्री मरियम सिद्दीकी द्वारा किया गया। गीताश्री मरियम वही बालिका है जिन्हें हजारों प्रतिभागियों के बीच सन 2015 में मात्र 12 साल की उम्र में इस्कॉन की गीता लीग चैंपियंस ट्रॉफी जीतने का गौरव हासिल है। डॉ वीरेन्द्र सिंह गोधारा स्वयं मेडिकल डॉक्टर रहे हैं जो केंद्रीय स्वास्थ्य सेवाओं से निवृत हो चुके हैं, वह बेहद सजग विचारक, बुद्धिजीवी और संगीत प्रेमी हैं। इसी जाट सभा के प्रांगण में चौधरी छोटूराम के संबंध में हमने उनके व्याख्यान सुने हैं। गीता पराग पुस्तक लिखने के पीछे उनका कोई धार्मिक दृष्टिकोण दिखाई नहीं देता है वह स्वयं ही इस बात को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि –

"गीता के बारे में कुछ लिखने का विचार मेरे मन में निकट अतीत में कुछ न्यस्त स्वार्थों द्वारा गीता के उस राजनीतिकरण से उत्पन्न हुआ जो सिद्धांतों के चोले में राजनीतिक रोटियां सेकने के लिए किया गया था, विद्यालयों के माध्यम से गीता का ज्ञान आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाने के प्रस्ताव का स्वयंभू धर्मनिरपेक्षता के ठेकेदारों द्वारा ऐसी प्रचंडता से विरोध हुआ जैसे यह कोई जघन्य अपराध हो। यह विरोध कोई राजनेताओं अथवा राजनीतिक कार्यकर्ताओं का नहीं अपितु राजनीति के ठेकेदारों द्वारा किया गया था जिनके लिए विचार भी व्यापार की वस्तु है। समझा जा सकता है कि इन ठेकेदारों को धर्मनिरपेक्षता की कोई समझ नहीं है गीता की तो बात ही जाने दीजिए इनकी सद्बुद्धि के लिए प्रार्थना ही की जा सकती है क्योंकि गीता को किसी एक धर्म अथवा संप्रदाय तक सीमित कर देना वटवृक्ष को गमले में समेट देना जैसा होगा।

डॉ वीरेंद्र गोधारा कि यह पुस्तक अठारह अध्यायों में समाहित की गई है। यह पुस्तक अंग्रेजी और हिंदी में लिखी गई है अतः अध्यायों की संख्या दुगनी हो गई है। पहले अध्याय को ही देखें तो प्रथम अध्याय अंग्रेजी में तथा दूसरे अध्याय में उसी को हिंदी में लिखा गया है। डॉ वीरेंद्र गोधारा ने आरम्भ में ही गीता के प्रति उनके लगाव – झुकाव को साफगोई और सहजता से प्रकट किया है। वह लिखते हैं कि "गीता से मेरा तारात्म्य एक सामान्य मनुष्य का है तथा मैं दृढ़ता से कहना चाहता हूं कि गीता में एक सामान्य मनुष्य के लिए बहुत कुछ उपलब्ध है"। उदाहरण के लिए हम यहां गीता का महत्वपूर्ण और सर्वाधिक उद्धृत श्लोक को ही लेते हैं :–

कर्मण्यवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भुमा सगो स्त्वकर्माणि।।

(तुम्हें अपना कर्म करने का अधिकार है किंतु कर्म के फल के तुम अधिकारी नहीं हो, न तो तुम कभी स्वयं को अपने कर्मों के फल का कारण मानो, न ही कभी कर्म करने से विमुख हो)। यहाँ यह प्रश्न सहज ही सामने आ खड़ा होता है कि आज की परिस्थितियों में क्या यह संभव है कि कोई मनुष्य फल की इच्छा करे बगैर काम करता जाए ? डॉ गोधारा का कहना है कि कोई भी व्यक्ति सेवा या कार्य का अनुबंध जीविका उपार्जन के लिए करता है जैसे कुए में बाल्टी पानी निकालने के लिए डालता है या फिर अनाज उगाने के लिए हल चलाता

है सच है किन्तु इसका दूसरा पहलू भी है, फर्ज कीजिए कुए का जल ही दूषित हो जाए या खेती को ही पाला मार जाए तो ऐसे में निराशा होने स्वाभाविक है। इस श्लोक का संदेश हमें ऐसी निराशावादी परिस्थितियों में धैर्य के लिए प्रेरित करता है। क्योंकि मनुष्य का भाग्य पर तो वश नहीं परन्तु अपना कर्म निष्ठापूर्वक करते जाना तो उसके वश में है।

गीता एक सार्वभौमिक ग्रंथ है जिसे किसी धर्म या सम्प्रदाय से बाँध कर नहीं चल सकते। विश्वस्तर पर अनेक धर्मों के लोगों ने गीता पर कार्य किया है। संसार में गीता से प्रभावित होने वाले अनेक महापुरुष हैं जिनके जीवन को गीता ने पूरी तरह बदल दिया है। आयरिश मूल के विश्व विख्यात कवि विलियम बटलर यीट्स, जर्मन–फ्रेंच धर्म शास्त्री और नोबेल शांति पुरस्कार विजेता ऑलबेयर श्वाइत्जे, ईरानी विद्वान अलबेरुनी, अल्बर्ट आइन्स्टीन जैसे महापुरुषों की लम्बी सूची है।

गीता और मुसलमान :– डॉ गोधारा ऐसे कई जिक्र करते हैं जैसे जनवरी 2016 में मुंबई कॉस्मापॉलिटन हाई स्कूल की छात्रा मरियम सिद्दीकी को गीताश्री पुरस्कार खुद हमारे प्रधानमंत्री द्वारा दिया गया। अगर इतिहास पर नजर डालें तो अलबेरुनी से लेकर अकबर के नवरत्नों में से एक फैजी व दारा शिकोह ने गीता का फारसी अनुवाद किया। 16 वीं 17 वी शताब्दी के हिंदी कवि रसखान से उनके कृष्ण भक्त होने के उदगार निम्न अनुसार व्यक्त किए हैं :–

मानुस हौं तो वही रसखान, बसों ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।
जो पशु हौं तो कहा बस मेरो, चरों नित नन्द की धेनु मझारन।।

डॉ रफीक जकारिया प्रख्यात लेखक की बहुचर्चित पुस्तक इंडियन मुस्लिम्स : व्हेर हैव दे गोन रॉन्ग में एक पूरा अध्याय मुस्लिम रेवरेंस फॉर गीता पर है। डॉक्टर शमीम तारीक जिन्हें उर्दू के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार हुआ है अपने लेख, कृष्णा इन पोएटिक विज्डम ऑफ सूफीज में इसे सर्वाधिक स्वीकृत प्रतीक मानते हैं। नजीर अकबराबादी, अल्लामा मुहम्मद इकबाल, बशीर अहमद 'मयूख' और अनेक रचनाकारों के बाद महान गायक मोहम्मद रफी के गीतों को कौन भुला सकता है. .... मन तड़पत हरी दर्शन को आज...या फिर... बड़ी देर हुई नंद लाला आदि। इस्मत चुगताई से लेकर साहिर लुधियानवी तक अपने कलाम में गीता का संदेश देते रहे हैं।

अतः गीता एक ऐसा ग्रंथ है जो जीवन के दुविधाओं और किंकर्तव्यविमूढ़ताओं का निवारण आशादीप से करता है। डॉ वीरेन्द्र गोधारा की ये गीता के अठारह अध्यायों के कुल सात सौ श्लोकों में से केवल सत्तर श्लोक छांट कर उनकी अंग्रेजी–हिंदी व्याख्या इस आशय से दी है कि वे गीता का सर्वाधिक संदेश प्रस्तुत कर सकें परन्तु वे मानते हैं कि गीता का हर श्लोक अपने आप में एक रत्न है। डॉ वीरेन्द्र गोधारा की यह पुस्तक गीता के पराग को बिना किसी अवरोध व मुश्किल के आम जनता तक ले जाती है। उन्हें हार्दिक बधाई।

पीक्यूएनके मॉडल से आसान हुई जैविक खेती, पानी की खपत भी कम

– प्रो० विनोद कुमार

खेती के लिए किसानों को अब न रसायनों पर पैसा खर्च करने की जरूरत है और न पानी की खपत की समस्या। पैदार कुदरती निजामे काश्तकारी (पीक्यूएनके) मॉडल के जरिए किसानों का जैविक खेती करना आसान हो गया है। इसे अपनाकर देश के किसान लाभ कमा रहे हैं। इस तकनीक को पाकिस्तान के डॉ. आसिफ ने विकसित किया है। इनके लिए पीयू के प्रो. विनोद ने मशीनें डिजाइन की हैं।

पीक्यूएनके एक जैविक खेती करने का तरीका है, जिसमें सब सॉवलर मशीन के जरिए जमीन को तीन फीट गहरा काटा जाता है ताकि मिट्टी की सख्त परत हट जाए और पानी अंदर तक रिस सके। इसके बाद ट्रैक्टर पर सीलर मशीन के जरिए बीच में क्यारियां तैयार की जाती हैं, जिस पर बिजाई की जा सके। पानी को पूरे खेत में डालने की जगह सिर्फ क्यारियों की दोनों तरफ डाला जाता है और अंत में मल्चिंग होती है। मॉडल की खासियत यह है कि एक चार क्यारियां तैयार करने पर वह जीवनभर काम आती हैं और इसमें ट्रैक्टर का कम प्रयोग रहता है। जमीन को एक बार गहरा काट देने से ग्राउंड वाटर रिचार्ज आसानी से होता है। नीचे के सारे न्यूट्रिएंट फसल को मिलते हैं।

पीक्यूएनके मॉडल को पाकिस्तान के डॉ. आसिफ ने करीब 40 साल पहले विकसित किया है। नी साल पहले प्रो. विनोद ने उनके साथ मिलकर इस पर काम करना शुरू किया। प्रो. विनोद ने पीक्यूएनके मॉडल को अपनाने के लिए सब सॉयलर, सीलर और मल्चिंग मशीन डिजाइन की। स्वयं इस मॉडल को अपनाने के साथ अन्य किसानों को इसकी ट्रेनिंग देना शुरू किया। अभी अबोहर, फाजिल्का, करनाल, फतेहाबाद, लुधियाना समेत राजस्थान, उत्तराखंड, मध्य प्रदेश और हिमाचल प्रदेश से किसान प्रो. विनोद के साथ जुड़े हैं, जो जैविक खेती के लिए पीक्यूएनके मॉडल को अपना रहे हैं।

प्रो. विनोद ने बताया कि नौ साल पहले खेती करने के लिए श्रेष्ठ तकनीक का पता करने पर उन्हें यह सबसे बेहतर

लगी, जिसमें गुरु नानक की वाणी मिली है। गुरु नानक हवा, पानी और जमीन को माता–पिता के समान के कहते हैं। उनमें रासायन मिलाना उसमें जहर मिलाने जैसा है। हमारी हवा, पानी और धरती साफ होगी तो ही हम स्वस्थ रह पाएंगे। पीक्यूएनके मॉडल को लेकर प्रो. विनोद से भिन्न सवाल पूछे गए, जिनका उन्होंने निम्नलिखित जवाब दिया।

सवालः ग्राउंड वाटर रिचार्ज करने में पीक्यूएनके कैसे सक्षम है?

जवाबः पंजाब के 138 ब्लॉक में से 119 में भूजल खत्म होने की कगार पर हैं। ओवर एक्सप्लोइटेशन की श्रेणी में है। इसके बावजूद खेती के लिए भूजल का अधिक प्रयोग हो रहा है। अधिक रसायन और भारी मशीनों के प्रयोग से जमीन सख्त हो गई, जिससे पानी उसमें नहीं रिस रहा। पीक्यूएनके मॉडल जमीन को गहरा खोदकर उसमें पानी के रिसने की जगह बनाती है।

सवालः किसानों को साथ में कैसे जोड़ा ?

जवाबः खेती के इस मॉडल को आम किसान तक पहुंचाया जा सकें। इसलिए सोशल मीडिया पर प्रचार किया। स्वयं खेती करने पर आसपास के किसानों को इसके बारे में बताया। लगातार वीडियो अपलोड करके, व्हाट्सएप ग्रुप बना लोग जुड़ते गए। 1000 से अधिक किसान व्हाट्सएप ग्रुप पर जुड़े हैं। वहीं, जर्मनी, रूस, इथियोपिया और अफ्रीकन देशों में भी लोग पीक्यूएनके मॉडल को अपना रहे हैं और लगातार संपर्क में हैं।

सवालः कीटनाशक और उर्वरक की जरूरत क्यों नहीं?

जवाबः जमीन को गहरा काट देने से उसकी निचली सतह से फसल को न्यूट्रिएंट्स मिलते हैं और केंचुए भी इसमें मदद करते हैं। खेती के इस मॉडल में पराली को जलाने की जगह उसे जमीन को कवर किया जाता है। जमीन को पराली से ढक देने से उसकी नमी बनी रहती है। तापमान संतुलित रहता है। जमीन गर्म नहीं होगी तो उसमें अधिक नमी रहेगी। पराली से ढकने पर कीड़ें जैसे केंचुओं को पनपने की जगह मिलती है और वह फसल को न्यूट्रिएंट्स देते हैं।

सवालः पीक्यूएनके मॉडल के लिए मशीन डिजाइन के अलावा और क्या काम कर रहे हैं?

जवाबः पीक्यूएनके मॉडल में हम अलग–अलग फसल संयोजन विकसित करने पर काम कर रहे हैं, जिसमें हमें सफलता मिली है। बांस के साथ हल्दी, जैतून के साथ हल्दी, अदरक उगा सकते हैं। सिट्रिक फलों जैसे कीन्नू, मौसंबी के साथ मिर्च उगा सकते हैं।

सामाजिक संस्था और ग्रामीण विकास

रामबीर सिंह दहिया

सबसे पहली बात तो ये है कि हम चाहे किसी भी धर्म या मजहब से ताल्लुक रखते हैं, उससे पहले हम जाट हैं। सबसे पहले हम जाट हैं, उसके बाद हिन्दू या मुसलमान, सिक्ख, इसाई या बिशनोई हैं। धर्म अलग होने से जाति नहीं बदल जाती। हम चाहे कहीं चले जाएं, किसी भी या साम्प्रदाय को अपना ले, हम अपनी जाति को नहीं छोड़ सकते। धर्म या मजहब तो उस मालिक की पूजा या भक्ति करने का एक तरीका है। जो तरीका हमें अच्छा लगता है, उसे अपना लेते हैं। जैसे हिन्दु धर्म में बहुत सारे देवी–देवता हैं। एक भाई हनुभान को मानता है, एक शिवजी और एक राम को मानता है, तो इससे क्या वे भाई नहीं रहें। हम चाहे मन्दिर में जाते हैं, चाहे मस्जिद, गुरुद्वारे या चर्च में जाते हैं। हम सब जाट हैं। हमारा खून एक है हमारे पूर्वज एक हैं। हम सब भाई–भाई हैं। यदि कोई हमारे अन्दर कोई दरार डालने की कोशिश करता है तो उसे मुंह की खानी पड़ती है। वह इस षड़यन्त्र में भी सफल नहीं हो सकता।

दूसरी बात ये है कि जाट के नाम पर अनेकों संस्थाएं काम कर रही हैं। कुछ लोग कहते हैं कि इतनी संस्थाओं की क्या आवश्यकता है। लेकिन मेरा ये मानना है कि जितनी अधिक संस्थाएं होंगी, उतनी ही अधिक हमारी कौम का भला होगा। अधिक संस्थाएं बनना या बनाना जागरुकता की निशानी है। इनसे कोई नुकसान नहीं है, फायदा ही फायदा है। लेकिन ये फायदा हमें तब होता है जब संस्था का अपना अलग एजेन्डा होता है।अलग कार्यक्रम होता है। ये ठीक है कि हर संस्था के अपने Aims and objectives हैं। लेकिन ये IMS and objectives जब संस्था रजिस्टर करवाई जाती है, उस समय लिए जाते हैं, उसके बाद समय के साथ–साथ हम अपने उन असल उद्देश्यों को भूल जाते हैं ओर नया रास्ता पकड़ लेते हैं।

हमारी जाति की अनेको समस्याएं हैं। यदि सभी संस्थाएं उन संमस्याओं को ध्यान में रखकर काम करें, Agenda बनायें तो आगे बढ़ने से कौन रोक सकता है। हमारी जाति के अधिकतर लोग गांव–देहात में रहते हैं और वहां की अपनी समस्याएं हैं जिन पर विचार करना उन पर काम करना परम–परम आवश्यक है।

गांव–देहात में हमारी जो सबसे जो बड़ी समस्या है शिक्षा है। शिक्षा के क्षेत्र में यदि हम दूसरी किसान जातियों से अपनी तुलना करें तो हम उन सबसे बहुत आगे नहीं तो उनसे आगे जरुर है।। लेकिन गांव में शिक्षा की गुणवत्ता नहीं है। इसमें हमारा या हमारे बच्चों का कोई दोष नहीं है। दोष व्यवस्था का है। क्या हम जानते हैं कि गांव में अनेकों ऐसे स्कूल हैं जहां स्टॉफ की कमी है, शिक्षक पूरे नहीं है तो फिर पढ़ाई कैसे होगी। और एक बात जानकर मुझे बड़ा धक्का लगा और आपको भी लगेगा कि गांव में अनेकों ऐसे स्कूल हैं जहां साईन्स या मैडिकल ब्रान्च ही नहीं हैं। उन स्कूलों में साईन्स

नहीं पढ़ाई जाती जबकि अनेकों ऐसी नौकरियां हैं ऐसे पद हैं जहां मूल योग्यता ही ये हैं कि प्रार्थी साईन्स से 12 वीं पास होना चाहिए। हमने आरक्षण के लिए बहुत संघर्ष किया है। हम बड़े गर्व से कहते हैं कि आरक्षण के बाद इन्जीनियरिंग और मैडिकल में हमारे बच्चे अधिक संख्या में प्रवेश प्राप्त कर सकेंगे। लेकिन जब बच्चों ने ये विषय पढ़े ही नहीं हैं तो दाखिला कहां ले सकेगा। ये ठीक है कि गांव–देहात में अनेकों प्राईवेट स्कूल खुल गए हैं जहां साईन्स और मैडिकल विषय पढ़ाए जाते हैं। लेकिन गांव में सबकी ऐसी आर्थिक हालत नहीं है कि वह अपने बच्चों को महंगे स्कूल में भेज सकें। मुझे नहीं लगता कि किसी संस्था ने इस समस्या के समाधान के लिए कोई मुहिम चलाई हो। आरक्षण का लाभ हम तभी ले पाएंगे जब शिक्षा के स्तर में सुधार होगा और इसके लिए हमें लड़ाई लड़नी होगी।

पिछले कुछ वर्षों में हमने कई क्षेत्रों में काफी उन्नति की है। चाहे वह खेल का क्षेत्र हो। चाहे दूसरे क्षेत्र हों, हमने बहुत मेहनत की है और हम आगे बढ़े हैं। लेकिन सबसे अधिक उन्नती हमने जिस क्षेत्र में की हैं वह है नशाखोरी। नशाखोरी का चलन हमारी जाति में बहुत बढ़ गया है। यदि हम शाम के समय गांव में जाकर देखें तो वास्तविकता हमारे सामने आ जाती हैं कोई बिरला घर ही इस शराब के जहर से बच पाया है। मुझे नहीं पता कि किसी संस्था ने इस क्षेत्र में कुछ कार्य किया हो। हम शराब के विरुद्ध प्रचार कर सकते हैं। शराब की लत छुड़ाने के लिए नशा मुक्ति केन्द्र खोल सकते हैं शराब की दुकान गांव से दूर हो, इस दिशा में भी हम प्रयास कर सकते हैं। हमारी जाति का जो भी व्यक्ति गांव में रहता है, एक तो उसकी आय सीमित है, दूसरे वह इस आय का अधिकतम हिस्सा शराब में खर्च कर देता है। बच्चों की सेहत या भलाई के लिए खर्च करने के लिए कुछ नहीं बचता जिसके कारण भविष्य की नस्ल कमजोर होती जा रही है। इस दिशा में हमें काम करने की आवश्यकता है।

इसके अतिरिक्त पूरे क्षेत्र में आनर किलिंग की घटनाएं दिन प्रतिदिन बढ़ रही है। इसका कारण हम खुद हैं। क्योंकि हम अपने बच्चों को गोत्र सम्बन्धी मामलों में शिक्षित नहीं करते। उन्हें इस विषय की गम्भीरता का ज्ञान नहीं हो पाता। इसके लिए दो मुहिम चलाने की आवश्यकता है। एक तो हम अपने बच्चों को सामाजिक नियमों के बारे में शिक्षित करें। दूसरे हिन्दू मैरिज एक्ट में संशोधान कराने के लिए एक बड़े स्तर पर आन्दोलन चलाएं। सिर्फ कहने से ये संशोधन नहीं होगा। इसके लिए हमारी संस्थाओं को आगे आना होगा और लड़ाई लड़नी होगी।

सेवा का फल : गुरु की कृपा

सेवा में बहुत आनन्द है। हनुमानजी ने सेवा करके ही तो पाया अपने राम को। हनुमानजी के अतिरिक्त सेवा का दुसरा पर्याय संसार में हो ही नहीं सकता। सेवा का अभिप्राय एक ही शब्द है, हनुमान। हनुमानजी का रुप क्या है? हन कहते है मारने को, और मान का मतलब जिन्होंने अपने मान को मार लिया हो। जो अपने मान को मार के सेवा में लग गए हों वही तो तो सच्चे सेवक होते हैं। और हनुमानजी सेवा मांगते नहीं, सेवा पूछते नहीं, ये नहीं कहते कि जरा बताइए क्या सेवा करुं, मौका ढूंढते हैं कि सेवा का कोई काम सामने दिखाई देता हो तो सबसे पहले आगे बढकर उसे करने लगते हैं और इस तरह रामजी को प्रसन्न करने में लगे रहते है। और रामजी प्रसन्न होकर क्या कहते हैं, हनुमान से,'तुम मम् प्रिय भरत सम भाई', तुम मुझे भरत जैसे प्यारे भाई हो। सेवक हनुमान भाई जैसे शब्द को पा गया।

राम जी को उन्हें भाई कहना पड़ा, तो विचार करके देखिए–अगर हम लोक सेवा को संकल्पबद्ध कर ले तो वह सेवा परमात्मा तक लेकर जाती है। लेकिन सेवक भोला होना चाहिए, कुटिल नहीं और सेवक को मुंह बंद रखना चाहिए और काम करते रहना चाहिए। हनुमानजी बोलतें नहीं हैं सरल हैं, भोले हैं, सेवक को किसी भी प्रकार के पदार्थ का आकर्षण मन में नहीं रखना चाहिए। जानकी जी ने कीमती हार दिया था। हनुमानजी ने यह कहते हुए दांतों से चबा–चबाकर तोड़ फेंक दिया कि दुनिया में रामजी के नाम से बढ़कर कीमती क्या है हमारे लिए? हमारे लिए तो हमें राम चाहिए। कितना भोलापन है, जबकि हनुमानजी के लिए कहा गया है 'ज्ञानीनाम् अग्रगण्यण' जानियों के भी ज्ञानी हैं, लेकिन फिर भी कितने भोले हैं, जानकी माता से पूछते हैं कि आप यह सिंदूर किस लिए लगा रही हैं, सीता मां क्या समझाएं? उन्होंने सीधे ढंग से कह दिया अपने स्वामी को प्रसन्न करने के लिए लगा रही हूँ। रामजी को प्रसन्न करने के लिए सिन्दूर लगाती हैं। सिन्दूर लगाने से राम जी खुश होते हैं, ऐसा सोचकर हनुमानजी गए और पूरे शरीर पर सिन्दूर लगाकर आ गए। बोले, मां! आपसे तो रामजी थोड़े प्रसन्न होंगे, मेरे ऊपर तो प्रसन्न होगें। मैनें तो ज्यादा सिन्दूर लगा लिया है सारे शरीर पर। हमारे मन्दिरों में जहां हनुमानजी की मूर्तियां हैं, उनका वह रुप भी प्रदर्शित किया जाता हैं, जिसमें वक्ष चीर करके, छाती चीर करके रामजी और सीताजी का रुप दिखा रहें हैं वह रुप भी जिसमें संजीवनी बूटी लेकर पहाड़ हाथ में उठाए लेकर आ रहें है। यह सब कुछ प्रदर्शित किया जाता है, लेकिन हर मन्दिर के अन्दर सिन्दूर वाले हनुमानजी जरुर लगाए जाते हैं, क्योंकि भक्त लोग यह कहते है कि हनुममान रामजी को रिझाने के लिए जिस रंग में रंगे थे वहीं रंग हमारे माथे पर भी लगा दो। हम भी राम के रंग में रंग जाएं। हमें वह भक्त मिल जाएं। इसलिए हर कोई हनुमान के चरणों में लगे हुए सिन्दूर को अपने माथे पर लगाता है, क्योंकि ऐसा ही भगती, ऐसी सरलता लेकर जो भक्ति करता है, सेवा करता है वही तो परमात्मा का प्यार पाता है, इसलिए वह रंग लगाओं अपने अन्दर जो सेवा का रेग है। शरीर का तप यही है कि अपने बड़ों को, अपने पूज्यजनों का पूजय करो। सेवा के माध्यम से उन्हें प्रसन्न करो। सेवा से पाया जा सकता है परमात्मा को। भक्ति में मन लगे न लगे, लेकिन सेवा में तो आसानी से मन लग सकता है। पर सेवा करने के साथ–साथ यह कामना कभी मत करो कि माइक पर हमारा नाम लेकर हमें आगे बुलाया जाए। अगर ऐसी कामना करोगें तो उसका फल उतना ही मिलेगा। अगर अनन्त फल पाना चाहते हो तो फिर फल की कामना छोड़ दो। सबसे पीछे रहकर सेवा करो। फिर देखोगे कि बैठोगे तो

सबसे पीछे और परमात्मा के सबसे ज्यादा करीब हो जाओगे, क्योंकि परमात्मा अन्तर्यामी है हर किसी को देखता है।

भगवान कहते है 'शोचंआर्जवम्' पवित्र रहो और अपने आपको सरल बनाए रखों, यही तप है जो सरलता से प्राप्त होता है। नीतिकार ऐसा कहते है कि आदमी को सीधा बनाना ही नहीं चाहिए। नीतिकार कहते है कि सीधा बनने से बड़ा नुकसान है। जंगल में जितने भी सीधे पेड़ हैं वहीं काटे जाते है। जो टेढ़ा पेड़ है उसे कोई नहीं काटता। टेढ़ा पेड़ जो अगर कोई काटेगा तो हर किसी को घरबराहट रहती है कि कहीं हमारे ऊपर न गिर जाए, क्योंकि टेढ़ा तो किधर भी गिर सकता है नीतिकार कहते है कि टेढ़ा बने रहोगे दुनियां में सुखी रहोगे, सीधा बनने से तो नुकसान हैं। अब किसकी बात मान जाए। पर मैं एक बात कहूंगा, नीतिकार आपको कुछ भी कहता हो, यह भी ठीक है सीधे पेड़ ही काटे जाते है, क्योंकि संसार में अगर कुछ निर्माण हो सकता है तो पेड़ से ही निर्मित हो सकता है, टेढ़े पेड़ से कुछ चीज बना नहीं सकते, टेढ़ा पेड़ तो ईधन जलाने के काम में ही आया करता हे और जो सीधा पेड़ है उनके द्वारा संसार में फर्नीचर बनता है, मकान बनता है, उनकी छाया में दुनिया रहा करती है। तो ' यह संसार चलेगा तो सीधे लोगों से ही चलेगा, टेढ़े लोगों से नहीं। व्यक्ति को अगर परमात्मा मिलेगा तो सीधेपन से ही मिलेगा, इसलिए सीधे बनकर रहो तो कृपा होती है। शरीर के तप के सम्बन्ध में भगवान आगे फिर कहते हैः ब्रह्मचर्य अहिंसा च' संयमी होकर व्यक्ति रहे और हिंसा को त्यागे, अपने हाथों से कभी किसी को कष्ठ न दें। भगवान श्रीकृष्ण ने कहा कि यह शरीर का तप है। आगे बताते है बाणी का तप क्या है।

महात्मा बुद्ध का एक शिष्य था। सारिपुत्र। महात्मा बुद्ध की शरण में आकर उसने कहा बुझा हुआ दिया लेकर आया हूं। अपने ज्ञान की ज्योति से इसे आलोकित कर दो। ऐसी रोशनी भरो कि जगमगाऊं। यह जगमगाहट सारे में बांट दूं। महात्मा बुद्ध ने प्यार से उसे अपने पास बैठाया। वह लम्बें अर्स तक महात्मा बुद्ध की शरण में रहां उनसे कुछ सीखकर आया और एक दिन ऐसी स्थिती आ गयी, जैसे महात्मा बुद्ध बोलते थे वैसे बोलने लगा वैसे चलने लगा, वैसे बैठने लगा, गुरु उसके हृदय में उतर आया।

महात्मा बुद्ध ने बुलाया और कहा– सारिपुत्र जाओं दुनिया में खबर कर दो तेरे अन्दर प्रकाश आ गया है। बाटने के लिए सारिपुत्र जाने लगा, जहां गया वही जाकर उपदेश करे। हजारों की संख्या में लोग उनके चरणों में आने लगे लेकिन लोग देखते थे कि हर सुबह सारिपुत्र उठकर एक दिन पूरब की और प्रणाम करें, वह रोज अलग–अलग दिशा में प्रणाम कर रहा था।

लोग पूछने लगे–कोई सामने है तो नहीं आप अलग–अलग दिशा में प्रणाम करते है। सारिपुत्र ने कहा, मेरी जेब में गुरु की डायरी है, जिधर–जिधर मेरे गुरु जाते है उसी दिशा में जमीन पर लेट कर उनके चरणों को प्रणाम कर लेता हूं क्योंकि मेरे लिए तो सूरज उधर से ही उगा हुआ है, उधर के प्रकाश से सिर झुकाके कह देता हूं मै साधारण इंसान था मेरे सतगुरुः लेकिन तूने इस लोहे को सोना नहीं बनाया तूने तो मुझको अपनी पारसमणी से छूकर पारस ही बना दिया है, अब इस पारसमणी से न जाने कितने लोग पारस होते जा रहे हैं। ऐसा ही प्यार ऐसे ही भक्ति के प्रति हो तो इंसान अपने जीवन में बहुत आगे बढ़ता है।

संसार में सबसे ज्यादा कीमती चीज इंसान का सिर है, अपना सिर अपने सत्गुरु के चरणों में झुकाना चाहिए, लेकिन आरती उतारे तो कैसे? चांद से चांदनी उधार मांग ले, चन्द्रमा का दीप जलाए, फूलों का रस लेकर ओस की बूंदो के साथ बहुत प्यार के साथ श्रद्धा–सहित अपने हृदय में हिलोर लेकर स्तवन करें, क्योकि दुनिया में कोई किसी को धन दे दे तो थोड़े ही दिनों में खर्च हो सकता है। लेकिन अगर कोई किसी को ज्ञान से ज्ञानवान बना दे तो वह उसे कभी न समसप्त होने वाला कोष दे देता है। इसके अतिरिक्त स्वयं ज्ञान देने वाले का, जितना खर्च करता जाता है उतना ही ज्ञान में वृद्धि होती जाती है। है न, यह अमूल्य निधि जो समाप्त होने के बजाए बढ़ती ही जाती है। गुरु तो ऐसी ही दौलत देता है।

श्रद्धापूर्वक बैठकर निवेदन करना प्रभु से कि अच्छा, बुरा, खोटा–खरा, जैसा–तैसा, तेरा हूं। तुझे स्वीकार करो। पुजा–स्थल पर अपने दर से मत करो भले ही कितना डाटना–झपटना अपने दर से दर न करना कुछ भी हो यह संसार है, भटकने मत देना, अपनी चरण–शराण में लगा कर चलना।हे प्रभु! ऐसी कृपा करना चाहे मान में हो, अपमान में हो, दुख में हो, सुख में हानि में हो, लाभ में हो, उन्नति में हो, अवनति में हो, तेरे दिए प्रसाद को प्रसन्नता से ग्रहण करु।तेरी दी गई जिन्दगी में कभी शिकायत न करुं सदैव धन्यवाद का भाव उठाता रहे।

भगवान के मन्दिर के बाहर तीन मजदूर बैठकर पत्थर तोड़ रहे थे। एक फकीर बाबा ने जाकर एक मजदूर से पूछा कि माथे पर पसीने की बूंदे हैं, आंखो में आंसू हैं, बात क्या है? उसने कहा–किस्मत का पत्थर तोड़ना आसान नहीं हैं, भाग्य ही ऐसा है। मजबूरी में ये सब करना पड़ता है।

महात्मा थोड़ा आगे बढ़ गये तो दूसरे मजदूर के पास गए, उसने कहा–तुम्हें भी अपनी जिन्दगी से शिकायत है, उसने कहा नहीं, शिकायत तो नहीं है। भगवान ने हाथ पाव अच्छे दिए है, आखिरी समय तक ये चलते रहें–यहीं अच्छा हैं। एक बात की तसल्ली जरुर है, मेहनत की कमाई लेकर जब में घर जाता हूं तो मैं अपने बच्चों से कहता हूं, देखो बेटा! ज्यादा पैसे तो नहीं कमा पाया, पर जितनी कमाई लेकर आया हूं पवित्र कमाई लेकर आया हूं, हलाल की कमाई लेकर आया हूं पाप की कामई नहीं लेकर आया हूं इसलिए बेटा सूखी रोटी में ईमानदारी का रस है। मेरे बच्चे प्यार से स्वीकार करों। महात्मा तीसरे मजदूर के पास गए तो वह उन्हें गाता–गुनगुनाता हुआ काम करता दिखायी दिया। उससे पूछा कि यह क्या कर रहें हो तो उसका जवाब था कि मन्दिर बना रहा हूं भगवान की सेवा कर रहा हूं, धन्य है मेरा भाग्य जो मुझे ऐसा अवसर मिला कि मैं भगवान की सेवा कर सकूं। तो यह है सेवा का स्वाद जो उस मजदूर ने चखा।

जीवन का लक्ष्य

– जयपाल विद्यालंकार, 9810256995

एक पुरानी पिक्चर है सारांश। इसी पिक्चर से आज के जाने–माने अभिनेता अनुपम खेर को सिने जगत् में प्रतिष्ठित स्थान मिला। इस पिक्चर में वयोवृद्ध दम्पति को यह समाचार मिला कि उनके इकलौते बेटे को अमेरिका में गुण्डों ने मार दिया है। बेटा अमेरिका में अध्ययन कर रहा था। वयोवृद्ध माता पिता को उसके उज्वल भविष्य की कल्पना थी। बेटा पढाई पूरी करके आयेगा और जीवन–सफर में कामयाबी के शिखर पर पहुँचेगा। यही कामना उनके जीवन का सहारा थी। पुत्र की मृत्यु से वह टूट गई। जीने का मकसद ही कोई नहीं रहा। कुछ समय पुत्र के अस्थि–पारसल को कस्टम से लेने के लिए जद्दोजहद करनी पडी। संवेदन–शून्य शासकीय बरताव से पार पाने के बाद निराशा से भरे नीरव घर में जीना दूभर हो गया। अवसाद के आवेश में आत्महत्या का निष्फल प्रयास किया। इसी समय एक युवा दम्पति पेइंग गैस्ट के रूप में रहने के लिए इनके पास आये। युवक और युवती अपनी समस्याओं से जूझ रहे थे। अनायास ही लक्ष्य हीन जीवन बिता रहे वृद्ध दम्पति उनकी समस्याओं में उलझ गए और यह उलझाव अनजाने ही उनके जीवन का मकसद बन गया। इस कहानी में पहले जीने का एक लक्ष्य था वह खतम हुआ तो सूनी जिन्दगी बेमायने हो गई। आत्महत्या का असफल प्रयास किया। फिर अचानक युवक–युगल की समस्याओं से निपटना तथा भ्रष्ट संवेदनशून्य व्यवस्था और आपराधिक गुंडों से उलझना जीवन का लक्ष्य बन गया।

बिना किसी लक्ष्य के जिन्दगी जीना कठिन ही नहीं बेमायने हो जाता है। प्राणी जो कुछ करता है उसका एक मकसद होता है। जीवित प्राणी बिना काम के नहीं रह सकता। जीवन है तो क्रिया है क्रिया है तो उसका कोई मकसद है। मकसद के न रहने पर क्रिया नहीं होगी और क्रिया के न होने पर जीवन की कोई सार्थकता नहीं रहेगी। जीवन किसी न किसी मकसद (लक्ष्य) पर टिका होता है। क्रिया के फल को मकसद, लक्ष्य, प्रयोजन कहते हैं। व्यवस्थित प्रकृति का सुलझा हुआ व्यक्ति अपने प्रयोजन को पाने के लिए योजनाबद्ध तरीके से कार्य करता है। कुछ मकसद दिनभर के काम से पूरे हो जाते हैं और कुछ पूरा होने में सप्ताह या महीने ले लेते हैं। कुछ काम जैसे विद्यार्थी को डाक्टर, सीए या प्रोफेसर बनने के लिए सालों कार्य करना पडता है। मकसद दिन, महीने या सालों में पाया जाने वाला हो सकता है। एक मकसद ऐसा भी हो सकता है जिसे पाने के लिए पहले अनेक छोटे मकसदों को पाना होता है। यह बात निर्विवाद है कि प्रयोजन या लक्ष्य के बिना नासमझ व्यक्ति भी कार्य में प्रवृत्त नहीं होता। जीवन, क्रिया और लक्ष्य का परस्पर अपरिहार्य संबन्ध है। जीवित प्राणी बिना क्रिया के और क्रिया बिना लक्ष्य के नहीं हो सकती। कार्य और उसके फल के संबन्ध में एक शंका यह हो सकती है कि भग्वदगीता तो निष्काम कर्म की बात कहती है और हम कर्म को फल के साथ अपरिहार्य रूप से जुडा हुआ मान कर चल रहे हैं। गीता के निष्काम कर्म सिद्धान्त का आशय ठीक से समझने की आवश्यक्ता है। कर्म और कर्म का फल ये दो तत्व परस्पर संबद्ध हैं। कर्म साक्षात् है और फल परोक्ष है। साक्षात् के साथ कर्म करने वाले व्यक्ति का संबन्ध उसकी इच्छा के आधीन है। वह चाहे तो कर्म करे और न चाहे तो न करे। कर्म पर उसका पूरा पूरा अधिकार है। फल उसके अधिकार से परे है। कर्म का फल निश्चित रूप से मिलेगा यह नहीं माना जा सकता। विद्यार्थी परीक्षा में अपनी समझ से अच्छा काम करने के बावजूद परिणाम के बारे तभी आश्वस्थ होता है जब परीक्षा परिणाम घोषित हो जाता है। प्रयत्न उसके अधिकार में है परन्तु उसका फल क्या होगा यह तभी पता चलता है जब कर्म समाप्त हो जाता है। कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन... इस श्लोक को गीता में कर्मयोग की चतु:सूत्री कहा जाता है। कर्म और फल के विषय में जो कहा गया वह स्पष्ट है और निर्विवाद है। तीसरे चरण (सूत्र) में कहा गया कि कर्मफल कर्ता को कार्य में नियोजित करने का हेतु न हो। इसे गौण–प्रधान भाव से समझना चाहिए। प्रत्यक्ष और अपने अधिकार में होने के कारण इस प्रसंग में कर्तव्य प्रधान है। परोक्ष तथा अपने अधिकार से बाहर होने के कारण फल गौण है। गीता में कहा जा रहा है कि फल को निमित्त मान कर कार्य मत कर। कार्य करना है इसी भावना से कार्य कर। कर्म और उसका फल क्योंकि परस्पर संलग्न हैं अतः इससे यह भाव नहीं निकलता कि फल को सर्वथा नजरंदाज कर दिया जाय। इसी लिए अगले चरण में यह कहा गया कि कर्म के प्रति उदासीन भी मत हो वस्तुतः इस प्रसंग में कर्मयोग के चार चरणों के शीर्षक बताए गए हैं। तात्पर्य यही है कि कर्म अपने हाथ में होने से प्रमुख और फल अपने हाथ में न होने से गौण है। गौण को प्रमुख का हेतु मत बना।

विवेच्य विषय यह है कि जीवन का लक्ष्य (मकसद, प्रयोजन) क्या है। अब तक यह स्पष्ट हुआ कि मनुष्य निरन्तर क्रियाशील है और क्रिया बिना प्रयोजन के नहीं होती। प्रयोजन को कामना भी कह सकते हैं और कामनाएं अनगिनत हैं। एक कामना पूरी होती है तो मन में दूसरी कामना उपजती है और मनुष्य उसे पूरा करने के लिए कार्य करने लगता है।

ये अनगित कामनाएं तो प्रश्न का समाधान नहीं हो सकता। तर्क संगत यही प्रतीत होता है कि जीवन के लक्ष्य से तात्पर्य वह लक्ष्य है जिसे पाने के लिए मनुष्य जीवन भर प्रयत्न करता है। ये छोटे–बडे लक्ष्य पूरे होते रहते हैं और जीवन में गतिशीलता बनी रहती है। इनमें कुछ चरम लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक होने के कारण उसके अंग बन जाते हैं। जिज्ञासा यह है कि वह चरम लक्ष्य क्या है और क्या सभी मनुष्यों का वही जीवन–लक्ष्य है। इसका उत्तर पाने के लिए हमें कर्म को पकडना होगा। जानना होगा कि वह कौनसा कर्म है जो दैनिक जीवन में नित्य छोटे–छोटे कर्मों के होने पर भी निरन्तर बना रहता है, कभी ओझल नहीं होता। निरन्तर बने रहने वाले इस कर्म का जो फल होगा वही जीवन का लक्ष्य होगा।

क्रिया चेतन सृष्टि का प्रमुख लक्षण है। प्रत्येक क्रिया किसी न किसी लक्ष्य प्राप्ति के निमित्त होती है। इच्छा या कामना मनुष्य की सब प्रवृत्तियों का मूल है। कामनाओं की कोई सीमा नहीं है। मन में नित्य नई नई कामनाएं उठती रहती हैं। कामनाओं की गिनती नहीं की जा सकती। फिर भी प्राचीन भारतीय मनीषियों ने मनुष्य की कामनाओं को श्रेणीबद्ध किया और इसके आधार पर चार पुरुषार्थों (कामना की पूर्ति के लिए किया जाने वाला उद्यम) की कल्पना की है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। धर्म की व्याख्या करने से पहले कुछ सरल अर्थ और काम को समझते हैं। सामान्यतः अर्थ शब्द अंग्रेजी के वैल्थ के समकक्ष है। हर वह वस्तु जो मनुष्य के लिए उपयोगी होने के कारण अभीप्सित है और जिसे पाने के लिए उद्यम करना पडता है अर्थ है। अर्थ नामक पुरुषार्थ के अन्तर्गत उन सब वस्तुओं को शामिल किया जाता है जो मनुष्य जीवन के लिए उपयोगी हैं। इस प्रकार उन सब क्रियाओं का समावेश अर्थ में होता है जो अर्थ (वैल्थ) के उपार्जन संग्रहण तथा रक्षण के निमित्त की जाती हैं। अर्थ की तरह काम भी व्यापक अर्थ वाला है। संसार के सकल पदार्थों के साथ मनुष्य का संबन्ध ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से होता है। इस संबन्ध के अनुकूल या प्रतिकूल होने पर क्रमशः सुख और दुःख होते हैं। मनुष्य की प्रवृत्ति सुख प्राप्त करने की होती है न कि दुःख पाने की। रूप, रस, गन्ध, शब्द और स्पर्श के उपभोग की कामना की पूर्ति के लिए मनुष्य द्वारा किया जाने वाला उद्यम काम पुरुषार्थ के अन्तर्गत आता है। अर्थ के अन्तर्गत वस्तु की प्राप्ति और जीवन के लिए उसका भोग तथा रूप, रस आदि विषयों की प्राप्ति तथा उनका उपभोग सतही तौर पर भिन्न न होकर एक ही प्रतीत होते हैं। परन्तु ऐसा है नहीं। एक उदाहरण से इसे स्पष्ट करते हैं। भूख प्राणीजात् की नैसर्गिक प्रवृत्ति है। शरीर की स्थिति के लिए उसे क्रियाशील बनाए रखने के लिए भोग्य पदार्थ भोजन आवश्यक है। भोजन भूख की निवृत्ति के लिए भी होता है और रसनेन्द्रिय की अनुकूलता अर्थात् जबान के स्वाद के लिए भी होता है। ये क्रमशः अर्थ और काम पुरुषार्थों के पृथक् पृथक् क्षेत्र हैं। ज्ञानेन्द्रियों की अनुकूलता अर्थात् ऐन्द्रिय सुख के लिए किया गया पदार्थ सेवन (विषय भोग) काम पुरुषार्थ है तथा शरीर की रक्षा उसकी क्रियाशीलता को बनाए रखने के लिए किया गया पदार्थ सेवन अर्थ पुरुषार्थ है।

प्रस्तुत संदर्भ में संस्कृत का धर्म शब्द सामान्य रूप से अंग्रेजी के दो शब्दों दृरिलीजन और इथिक्स का संयुक्त पर्याय है। मनुष्य मन में अभाव की अनुभूति कामना को जन्म देती है। इस ज्ञान ने एक ओर धर्म की कल्पना को जन्म दिया और दूसरी ओर मोक्ष की कल्पना को। कभी कभी मानव मन में ऐसी कामना जन्म लेती है जिसे मनुष्य अपनी सीमित क्षमता के कारण पूरा नहीं कर सकता। वह ऐसी शक्ति की ओर झुकता है जो उसकी निगाह में सर्वशक्तिमान, पूर्ण और दयालु हो। स्तुति, प्रार्थना, यज्ञ, जप, तप आदि अनुष्ठान से वह उस शक्ति को अपने अनुकूल करके अपनी कामना को पूरा करना चाहता है। अपने सामर्थ्य से परे इस अलौकिक शक्ति की शरण ही देवता या ईश्वर के विचार का बीज है। स्तुति, पूजा, अर्चना की सुविधा के लिए मानवी स्वरूप दे कर अनुष्ठान को सहज बनाना समूचे कर्मकाण्ड का आधार है। धर्म का यह पक्ष रिलीजन का समकक्षी है। धृतिक्षमादमोष्स्तेय शौचमिन्द्रयनिग्रहः धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम तथा अन्य स्मृति ग्रन्थों में जो धर्म के लक्षण बताए गए हैं वे धर्म के दूसरे पक्ष अर्थात् मनुष्य के आचार–व्यवहार को बताते हैं। कामना क्योंकि किसी सीमा से बंधी हुई नहीं होती अतः मनुष्य में सर्वथा अभाव–मुक्त, सर्वशक्तिमान, पूर्णता जो कभी समाप्त न हो, की कामना ने मोक्ष, स्वर्ग, ईश्वर के चरणों में स्थान आदि मान्यताओं को जन्म दिया। धर्म, अर्थ, काम इहलौकिक हैं। मोक्ष पारलौकिक है। अर्थ और काम, जिनका विवेचन ऊपर किया गया, को संयमित करने का काम धर्म का इथिक्स वाला पहलु करता है। भारत के मनीषियों का यह चिन्तन किसी एक समुदाय तक सीमित न हो कर समस्त मनुष्य जाति की क्रियाशीलता और उसके लक्ष्य को दर्शाता है। लौकिक दृष्टि से धर्म नियन्तृत अर्थ और काम पुरुषार्थ, जो अपने लक्ष्य के बिना कभी भी नहीं होते, जीवन का लक्ष्य या मकसद हैं। लक्ष्य तक पहुँचाने वाली क्रियाशीलता मनुष्य के कार्य–क्षेत्र से जुडी हुई है। प्रत्येक व्यक्ति का जीवन–लक्ष्य उसके अपने कार्यक्षेत्र से जुडा हुआ है। मोक्ष, परलोक की बात है। मोक्ष तथा सर्वशक्तिमान् एक दीव्य, पारलौकिक शक्ति के विषय में बहस सदा से चलती आई है और आगे भी चलती रहेगी। परोक्ष तथा पारलौकिक लक्ष्य की बजाय इहलौकिक एवं प्रत्यक्ष अपने अपने कार्यक्षेत्र के अनुरूप लक्ष्य ही जीवन का लक्ष्य है।

आवश्यक सूचना

जाट सभा चंडीगढ़, पंचकुला के सभी आजीवन सदस्यों को सूचित किया जाता है जाट सभा द्वारा अपने आजीवन सदस्यों की डायरेक्ट्री तैयार की जा रही है। इसलिये सभी आजीवन सदस्यों से अनुरोध है कि वे अपना पूर्ण विवरण यानि मूल निवास, वर्तमान पता, सम्पर्क नंबर सहित जाट सभा चंडीगढ़ अथवा पंचकुला के कार्यालय में 30 नवम्बर 2024 तक भेजने की कृपा करें ताकि आपकी आजीवन सदस्यता का विवरण डायरेक्ट्री में शामिल किया जा सके।

धन्यवाद सहित

सेक्रेटरी
जाट सभा चंडीगढ़/पंचकुला

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Jat Girl (DOB 22.06.97) 27/5'3" Employed as Nursing Officer in PGI Chandigarh on regular basis. Father's own business of Chemist. Mother house wife. Brother Sub Inspector in Chandigarh Police. Preferred suitable match with own house in Tricity or Chandigarh. Avoid Gotras: Bhanwala, Mor, Khatkar. Cont.: 9417579207
- SM4 Jat Girl (DOB 20.06.98) 26/5'5" B. Sc. Nursing. Employed as Nursing Officer in PGI Chandigarh on regular basis. Preferred suitable match in Government job. Family settled at Kaithal (Haryana). Avoid Gotras: Chahal, Sheokand, Moga. Cont.: 9468407521
- SM4 Jat Girl (DOB 29.11.94) 29/5'7" B.Sc. (I.T.) from Punjab University Chandigarh. Job: Cabin Crew in Indian Airlines. Father's own business of book shop. Mother housewife. Own house in Chandigarh. Avoid Gotras: Pahal, Malik, Sehrawat. Cont.: 9988407607
- SM4 Jat Girl (DOB 18.08.98) 26/5'4" Master in Public Health from Edith Cowen University Australia. MBBS from K. D. Medial College Mathura, Agra. Father General Secretary, Haryana Wrestling Association and runs Education Society. Mother Government teacher. Avoid Gotras: Sangwan, Dhull, Dahiya, Rathee, Lather. Cont.: 9418413789, 9999038751
- SM4 Jat Girl (DOB (06.02.92) 32/5'3" M. A. B.Ed. Working as teacher in private school at Mohali (Punjab). Father retired Inspector from Chandigarh Police. Family settled in Chandigarh. Avoid Gotras: Nain, Sangwan, Dhaliwal, Panghal. Cont.: 8699726944
- SM4 Jat Girl (DOB (02.08. 2001) 23/5'1" B. A. (Hons. Economics) with Math. M.A. Economics. Computer Course of one year. Avoid Gotras: Dagar, Duhan, Suhag. Cont.: 9463586496
- SM4 Jat Girl (DOB (28.01.90) 34/5'3" Employed as Class-I Officer in Haryana Government with package of Rs. 29 Lalkh PA. Preferred match settled in Chandigarh, Panchkula. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Sangwan, Dahiya, Khatri. Cont.: 8708116691
- SM4 Jat Girl 26/5'4" B.Sc. B.Ed., M.Sc. Physics, M.Ed., Pursuing PhD. Working as Teacher in Delhi World Public School Dhakoli (Punjab). Avoid Gotras: Lakra, Pawar. Cont.: 9216000072
- SM4 Jat Girl (DOB 19.01.95) 29/5'2" A.N.M., G.N.M. (Nursing). Working in Alchemist Hospital Sector 21, Panchkula. Family settled at Dhakoli (Punjab). Avoid Gotras: Dhaka, Chauhan. Cont.: 9872111042
- SM4 Jat Girl (DOB 07.09. 97) 27/5'8" B. Tech. (CS) from YMCA Faridabad. Employed as Probationary Officer in State Bank of India since April, 2022. Pursuing for I.A.S. Father M. D. Cooperative Bank Fatehabad. Mother housewife (MA, B.Ed.) Avoid Gotras: Pattar, Moun, Goyat, Dhull, Punia. Cont.: 9467210303
- SM4 Jat Girl (DOB 08.05.97) 27/5'4" B. E. Computer Science. Working in Veritas Technologies as SQA Engineer in Pune. Income Rs. 16 LPA. Father District Manager in HAFED. Mother Advocate. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Malik, Mahala, Boora. Cont.: 9417305287
- SM4 Jat Girl (DOB 11.02.98) 26/5'5". M.A. English from Punjab University Chandigarh. Steno English and Computer Diploma from HATRON. Working in private job in Chandigarh. Father retired Superintendent from Haryana Government. Mother housewife. Family settled at Zirakpur (Punjab). Preferred match in Tri-city. Avoid Gotras: Dahiya, Balyan, Jatrana. Cont.: 6239058052
- SM4 Jat Girl (DOB 08.08.96) 28/5'4" BSC (Non-Medical). M. A. English. Employed as Accountant (Non transferable) in the office of Principal Accountant General (A&E) Haryana, Chandigarh. Father employed in a reputed Fertilizer & Chemical Company. Mother housewife. Family settled at Kurukshetra (Haryana). Avoid Gotras: Sheokand, Goyat. Cont.: 8199998908
- SM4 (Divorced) Jat Girl 34/5'2" M.B.A. Pursuing PhD. Employed as Assistant Professor in Ch. Ranbir Singh Hooda University, Jind on contract basis. Father Chief Technical Officer retired from IIWBR, Karnal. Mother housewife. Family settled at Karnal. Preferred educated equally qualified match. Avoid Gotras: Dhillon, Kaindal, Jaglan. Cont.: 9416293593, 8307808611
- SM4 Jat Girl (DOB 04.03.98) 26/5'3" Lieutenant in Indian Army in EME branch. Posted in J & K area. Younger brother also Lieutenant in Indian Army. Father serving in Air Force. Mother Housewife. Avoid Gotras: Malik, Dhillon, Dangi. Cont.: 9541692438.
- SM4 Jat Girl (DOB 31.01.95) 28/5'1" B.Sc., M.Sc. (Botany). UGC, NET qualified. Ph.D in Botany from P. U. Chandigarh. Employed as Assistant Professor in College at Karnal on contract basis. Father retired from Defence. Mother housewife. Family settled at Ambala Cantt (Haryana). Avoid Gotras: Rathi, Kharb, Rana. Cont.: 9812238950
- SM4 Jat Girl (DOB 29/03/1999) 25/5'8" Employed as Indian Navy (Govt Job) on regular basis. Elder brother (married and in govt job) and Elder sister (married and in govt job). Live in Sector-12, Panipat. Avoid Gotras: Ahlawat, Mor, Malik. Cont.: 9466701215
- SM4 Jat Boy (DOB 06.11.98) 25/ 5'9" B. Com., Computer Diploma from HATRON. Own business of mobile repair. Own house in Panchkula. Avoid Gotras: Barak, Kadyan, Dalal. Cont.: 8146229865, 9877552019
- SM4 Divorced Jat Boy (DOB 25.02.91) 33/6 feet. Graduation from Punjab University Chandigarh. Father's own business of Book shop in Chandigarh. Mother housewife. Own house in Chandigarh. Mother housewife. Young sister doing Job in Airline. Avoid Gotras: Pahal, Malik, Sehrawat. Cont.: 9988407607
- SM4 Jat Boy (DOB 29.03.99) 25/5'8". Post Graduation. Employed in Indian Navy. Family settled at Panipat. Avoid Gotras: Ahlawat, Mor, Malik. Cont.: 9466701215
- SM4 Jat Boy (DOB 03.10.94) 30/5'11" B. Tech. Software Engineer. Income Rs. 17 LPA. Father Professor retired. Mother housewife. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Tomar, Malik. Cont.: 9463742136

- SM4 Jat Boy (DOB 13.05.97) 27/6 feet. M. A. from Punjab University. Own business. Income Rs. 15000/- PM. Father retired from Chandigarh Police. Family settled at Zirakpur. Avoid Gotras: Jatain, Malik, Nandal. Cont.: 9417371824
- SM4 Jat Boy (DOB 22.02.96) 28/5'9" B. E. in Computer Science and Engineering from Chitkara University. Master in Software Engineering from Canada in 2024. Worked as Software Engineer for four years in Patientbond India Pvt. Ltd. In Mohali.. Now working as Senior Software Developer in Mobile Programme India Pvt. Ltd. Company with package of Rs. 18 LPA. Father Gazetted Officer in Electricity Department, Panchkula. Family settled at Manimajra (U.T.). Avoid Gotras: Sehrawat, Chahal, Dalal. Cont.: 9988763877
- SM4 Jat Boy (DOB 28.06.96) 28/ 6 feet. MCA. Working in IT at Chandigarh location. Income Rs. 14 LPA. Father Sub Inspector in Chandigarh Police. Mother housewife. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Sihag, Lather, Redhu, Khatkar. Cont.: 9417862853
- SM4 Jat Boy (DOB 24.10.96) 27/5'10" Plus two, Diploma in Electrician. Family settled at Pinjore. Avoid Gotras: Bhanwala, Ruhal, Redhu. Cont.: 8053104615
- SM4 Jat Boy (DOB 10.01.96) 28/5'11" B. Tech. in Civil Engineering. Employed at Clerical Cadre post in Housing Board, Chandigarh on regular basis. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Kaliraman, Nain, Khatri, Malik. Cont.: 9780514690
- SM4 Jat Boy (DOB 02.01.95) 29/6'1" B. Tech. (IT), NMIMS Mumbai. Post Graduation in MBA (Marketing), NMIMS Mumbai. Worked at Aranca Global Research & Analytics Firms as Consultant at package Rs. 15 LPA. Currently working as a Freelance Project consultant and exploring new avenues to venture into. Father retired from HUDA, currently in construction business. Family income Rs. 70 LPA. Mother housewife. Avoid Gotras: Dalal, Gehlawat, Dhankhar. Cont.: 9910088655
- SM4 Jat Boy (DOB 21.08.95) 29/5'9" B. Tech. in Mechanical Engineering. Working as SEO Specialist in Mohali with Rs. 5 LPA package. Father in Government job. Mother housewife. Own house at Chandigarh. Avoid Gotras: Dabas, Sangwan, Dhankhar. Cont.: 7508929045, 9779132009
- SM4 Jat Boy (DOB 15.01.94) 30/ 6 feet. MBBS, M.D. in Medician. Only son. Father businessman. 20 acre agriculture land. Two Aahrat shops at Fatehabad. Preferred match of same profession. Avoid Gotras: Bharia, Saharan, Bhidaria. Cont.: 7015176069
- SM4 Jat Boy (DOB 07.07.98) 26/5'7" . M. D. final year from AIIMS Delhi in Radiation Oncology. Working as J. R. in AIIMS Delhi. Income Rs. 12 LPA. Father in Government job as a Building Inspector in Ulb department. Mother housewife. Preferred match M. D. Doctor or gazetted officer. Family settled at Rohtak. Avoid Gotras: Dagar, Kadyan. Cont.: 9812645624
- SM4 Jat Boy (DOB 02.07.95) 29/5'11". B. com., M. Com. from Punjab University. Chartered Account in practice for last five years. Avoid Gotras: Malik, Hooda, Dalal. Cont.: 7889059388
- SM4 Jat Boy (DOB 02.11. 2000) 23/6'1". B. Sc. Non-medical, M.Sc. Chemistry. Working as Manager in DCB Bank Hisar. 12 acre agriculture land. Avoid Gotras: Punia, Chahal, Beniwal. Cont.: 9217884178
- SM4 Jat Boy (DOB 02.10. 87) 36/5'2". Medical Engineer. Working in Mohali Rs. 15000/- PM. Avoid Gotras: Hooda, Malik. Cont.: 9915147487
- SM4 Jat Boy (DOB 18.10.90) 33/6'1". B. Tech. Employed as CBI Officer at Chandigarh. Father retired Under Secretary from Haryana government. Mother housewife. Family settled at Zirakpur (Punjab). Preferred well qualified and working match. Avoid Gotras: Khasa, Dahiya, Lathwal. Cont.: 9023492178
- SM4 Jat Boy (DOB 15. 12. 96) 27/5'9" B. E. (Civil) from Punjab University Chandigarh. Employed as J. E. Punjab Government Public Health Department through PPSC at Dera Bassi (Punjab). Father Class-II Officer in Central Government. Mother Group B service in Central Government. One flat in Zirakpur (Mohali). One plot in HUDA Ambala Cantt. and one plot in Sector 27 Panchkula. Agriculture land and ancestral house at native village. Avoid Gotras: Dalal, Mor, Sindhu. Cont.: 7973431263
- SM4 Jat Boy (DOB 13.01.97) 27/5'8" B. A. GBT, one year digital marketing diploma, one year HATRON diploma. Working in private firm. Father in Government job in Haryana Civil Secretariat. Mother JBT teacher in Education Department Haryana. Preferred local match. Avoid Gotras: Kundu. Aadhran, Dahiya. Cont.: 9915920806, 9878769627
- SM4 Jat Boy (DOB 06.07.96) 28/5'6" B. A. from Punjab University Chandigarh. Employed as Junior Accountant Assistant Level-5 Indian Railways at Chandigarh. Father Deputy Superintendent in Directorate of Employment Panchkula. Mother housewife. Avoid Gotras: Chahal, Bagri, Dangi. Cont.: 9416561365
- SM4 Jat Boy (DOB 30.12.94) 29/5'11" M.A. Employed as Clerk in Haryana State Consumer Commission, Panchkula. Father retired from Army and Haryana Government. Mother housewife. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Mor, Dhariwar,Chahal. Direct Gotras: Kataria, Punia, Grewal, Malik, Nehra. Cont.: 9416603097
- SM4 Jat Boy (DOB 20.02.92) 32/5'8" Qualification 10+2, DCA. Driving own cab in company. Own house at Panchkula. Avoid Gotras: Siwach, Grewal, Hooda. Cont.: 9417207683
- SM4 Jat Boy 24/6 feet. M. A. Work of Finance and Property. Avoid Gotras: Dangi, Kundu, Chhilar. Cont.: 7973119972.
- SM4 Jat Boy (DOB 28.04.93) 31/6'2" B. Com. Hons., M. Com. Hons. from MDU Rohtak. Self employed and set up an auto ancillary manufacturing unit in Rohtak. Self sustaining and providing employment to 15 youths. Annual income INR 25 lakh. Father retired Additional Director from Industry Department, Haryana. Mother Senior Lecturer (school cadre) in education Department. Own house at Rohtak. 21 agriculture land in village. Avoid Gotras: Sehrawat, Tomar, Dahiya. Cont.: 9416518530
- SM4 Jat Boy (DOB 11.07.93) 31/6'2" Physics Hons., LLB, LLM from Delhi University. Employed as Assistant Distt. Attorney (Gazetted Officer) in Public Prosecution Haryana. Father Advocate at District Court, Rohtak. Mother Government teacher

in Rohtak. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Hooda, Kadyan, Gahlot. Cont.: 8802748628

- SM4 Jat Boy MBBS from GMCH Sector 32 Chandigarh (AIR 1870). Holds GMC, UK Registration, Passed AMC Part 1 Australia. Currently working in ICU Paras Hospital Panchkula. Father retired Superintendent from PWD, B & R, Haryana. Mother Deputy Superintendent in DGHS, Haryana. Avoid Gotras: Ahlawat, Kadyan. Cont.: 7087151343, 9463124790
- SM4 Divorced Jat Boy (DOB 10.01.93) 31/ 6 feet. Own business. Father Ex-Serpanch. Ten acre agriculture land in village. Family settled in Delhi. Avoid Gotras: Gehlawat, Tehlan. Cont.: 9050171888, 8053604542
- SM4 Jat Boy (DOB August 99) 24/5'10" B. Tech. Pursuing M. Tech Mechanical. Owner of Petrol pump. Transport business. Mother Government employee HES-II, Father (late) Chief Engineer. Avoid Gotras: Nandal, Mehlan, Gehlawat. Cont.: 9996509501
- SM4 Jat Boy (DOB 10. 02. 98) 26/5'8" BCA. Working as Analyst, NAB MNC Gurugram. Package 10+Incentive LPA. Father Defence pensioner. Mother housewife. Family settled at Ambala Cantt (Haryana). Avoid Gotras: Rathee, Kharb, Rana.Cont.: 9812238950
- SM4 Jat Boy (DOB 18.08.94) 29/6 feet. B.Tech (Mechanical) from Kurukshetra University. Employed as Station Master in Railway at Ambala. Father retired from Army, now employed in Railway. Mother housewife. Avoid Gotras: Malik, Budhwar, Rana. Cont.: 9812331339
- SM4 Jat Boy 29/5'11". Working as Team Leader in Mohali with package of Rs. 6 lakh per year. Family settled at Zirakpur. Avoid Gotras: Naidu, Nain, Khatkar. Cont.: 9217126815, 9034837334

आर्थिक अनुदान की अपील

प्रिय साथियों, भाई–बहनों एवं बुजुर्गो,

आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि गांव नोमैई, ग्राम पंचायत कोटली बाजालान कटरा–जम्मु में जी.टी. रोड़ 10 पर चौ० छोटूराम यात्री निवास कटरा के लिये प्रस्तावित 10 कनाल भूस्थल पर चार दिवारी का निर्माण पूरा हो चुका है जिस पर लगभग 35 लाख रुपये खर्च हो चुके है। यात्री निवास स्थल पर विकास एवं पंचायत विभाग कटरा द्वारा सरकारी खर्च से दो महिला व पुरूष शौचालय एवं स्नानघर का निर्माण पहले से किया जा चुका है। यात्री स्थल की लिंक रोड़ पर छोटी पुलिया का काम पूर्ण हो चुका है तथा यात्रियों के ठहरने के लिये 5 कमरे पूर्ण रूप से तैयार हो चुके है।

यात्री निवास भवन का शिलान्यास व दीन बंधु चौधरी छोटू राम की विशालकाय प्रतिमा का अनावरण 10 फरवरी 2019 को बसंत पंचमी उत्सव एवं दीनबंधु चौधरी छोटूराम की 136वीं जयंती समारोह के दौरान महामहिम राज्यपाल, जम्मु कश्मीर माननीय श्री सत्यपाल मलिक, केंद्रीय मंत्री चौधरी बीरेन्द्र सिंह, केंद्रीय राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) पीएमओ डॉ० जितेंद्र सिंह व जाट सभा के अध्यक्ष एवं हरियाणा के पूर्व पुलिस महानिदेशक डॉ० एम एस मलिक, भा०पु०से० (सेवानिवृत) की उपस्थिति में सम्पन्न किया गया।

यात्री भवन में फैमिली सुट सहित 300 कमरे होगें। जिसमें मल्टीपर्पज हाल, कांफ्रेंस हाल, डिस्पेंसरी, मैडीकल स्टोर, लाइब्रेरी, बच्चों की प्रतिभा विकास एवं विभिन्न व्यवसायिक व सुरक्षा संबंधी सेवाओं में प्रवेश के लिए कोचिंग की विशेष सुविधाएं उपलब्ध होगी। सुरक्षा सैनिकों, शहीद परिवारों व उनके आश्रितों के लिए मुफ्त ठहरने तथा माता वैष्णों देवी के श्रद्धालुओं के लिए विशेष सुविधाएं प्रदान की जाएगी। यात्री निवास के निर्माण के लिये श्री राम कंवर साहु सुपुत्र श्री पूर्ण सिंह, मूल निवासी गांव बीबीपुर, जिला जीन्द, वर्तमान निवासी मकान नं0 110, सुभाष नगर, रोहतक द्वारा 5,11,111 रुपये तथा श्री सुखबीर सिंह नांदल, मकान नं. 426–427, नेमी सागर कालोनी, वैशाली नगर, जयपुर द्वारा 5,01,000 रुपये तथा श्री देशपाल सिंह, मकान न0 990, सैक्टर–3, कुरुक्षेत्र (हरियाणा) द्वारा 5,00,000 रुपये की राशि जाट सभा को दान स्वरूप प्रदान की गई है।

अतः आप सभी से नम्र निवेदन है कि इस कल्याणकारी व पुनित सामाजिक कार्य के लिए स्वेच्छा अनुसार शीघ्र अनुदान देने की कृपा करें। यदि कोई दानी सज्जन यात्री निवास में कमरे के निर्माण हेतु 5 लाख रूपये या इससे अधिक की राशि दान देता है तो उसका नाम भवन परिसर में उचित स्थान पर अंकित किया जाएगा। यात्री निवास भवन के लिए अनुदान देने वाले सज्जनों का उचित विवरण रखा जाएगा और उनका नाम सभा द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका 'जाट लहर' में भी प्रकाशित किया जाएगा। भवन निर्माण की अनुदान राशि चैक, डिमांड ड्राफ्ट द्वारा 'जाट सभा चंडीगढ़' के पक्ष में जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, मध्य मार्ग, चंडीगढ़ में भेजी जा सकती है अथवा आर.टी.जी.एस की मार्फत सीधे जाट सभा के बचत खाता नंबर 50100023714552, आईएफएससी कोड– एचडीएफसी 0001324 में ट्रांसफर की जा सकती है। अनुदान की राशि आयकर अधिनियम की धारा 80–जी के तहत आयकर से मुक्त है।

निवेदक : कार्यकारिणी जाट सभा चंडीगढ़/पंचकुला,
चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

महान व्यक्तित्व अब्राहम लिंकन

अब्राहम लिकंन सयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति थे। उन्होंने अमेरिका को एक बड़े संकट (अमेरिकी गृहयुद्ध) से पार लगाया। अमेरिका में दास प्रथा के अंत करने का श्रेय भी उन्हें ही जाता है। वे समाज के कामगार, दलित व गरीबों के मसीहा थे। उन्होंने अपने अथक प्रयासो से राष्ट्र का स्वरूप बदल दिया है।

लेसन्स फ्रॉम ग्रेट थिकर्स, सफल होने का संकल्प ही सबसे अहम होता है

- अगर शांति चाहते हैं तो लोकप्रियता से बचें।
- आपके सफल होने का संकल्प किसी भी अन्य संकल्प से ज्यादा महत्वपूर्ण है।
- अपने शत्रुओं को नष्ट करने का सबसे अच्छा तरीका है उन्हें मित्र बना लेना।
- मैं धीमे चलता हूं पर मैं कभी पीछे नहीं लौटता।
- हर कोई लंबा जीना चाहता है पर बूढ़ा नहीं होना चाहता। ऐसे जीएं कि हमेशा युवा रहें।
- अगर ऐसा कुछ भी है जो एक इंसान सही तरीके से कर सकता है तो उसे करने दो। उसे मौका दो।
- आलोचना करने का उसे ही अधिकार है, जिसके पास मदद करने का दिल भी है।
- ये मेरा अनुभव रहा है कि वो लोग जिनमें कोई अवगुण नहीं होता, उनमें गुण भी कम होते हैं।
- ज्यादातर लोग उतना ही खुश रहते हैं जितना कि वे अपना मन बना लेते हैं।
- आप जो भी बनें, उसमें सबसे अच्छा जरूर बनें।
- आप आज टालमटोल करके कल की जिम्मेदारी से बच नहीं सकते।
- पहले यह सुनिश्चित करें कि आपके कदम सही –जगह जमे हुए हैं, फिर दृढ़ता से खड़े रहें।

सम्पादक मंडल

सरंक्षक एवं सम्पादक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)

सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान

साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक

प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो॰ : 9888004417

श्री जे.एस. ढिल्लो, मो॰ : 9416282798

वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़

फोन : **0172-5086180, M-9877149580**

Email: jat_sabha@yahoo.com; Website: www.jatsabha.org

सर छोटूराम जाट भवन, सैक्टर–6, पंचकूला

फोन : 0172–2590870,M-9467763337

Email: jatbhawan6pkl@gmail.com

चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

Postal Registration No. CHD/0107/2024-2026

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सरंक्षक सम्पादक डा. एम. एस. मलिक ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2–बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27–ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।